बी०
१३२

सच्ची शान्ति की खोज

जे० सी० ख़ान

सच्ची शांति की खोज

लेखक
जार्डन सी० खान

अनुवादक
सिरिल पीटर्स

मसीही साहित्य संस्था
७० जनपथ, नई दिल्ली–१

प्रकाशक :
मसीही साहित्य संस्था
७० जनपथ, नई दिल्ली-१

© 1971 J. C. Khan

'The Search for True Peace'
by Jordan C. Khan

प्रथम संस्करण : ५,००० १९७१
द्वितीय संस्करण : ५०,००० १९७२

मुद्रक : अम्बैसडर प्रेस, ४२ खान मार्किट, नई दिल्ली-३

विषय-सूची

१.	सच्ची शांति	७
२.	सच्चा आनन्द	२३
३.	सच्चा उपचार	३२
४.	सच्ची ज्योति	४४
५.	सच्चा मार्ग	५३

प्रस्तावना

भाई जार्डन खान की समयोचित पुस्तक—"सच्ची शांति की खोज" के लिए प्रस्तावना लिखने से मैं प्रसन्न हूँ। परमेश्वर से स्वतन्त्र होकर जब से मनुष्य अपनी सभ्यता आप स्थापित करने का प्रयत्न कर रहा है, तब से वह उस सच्ची शांति को खो बैठा है, जिसके साथ उसकी सृष्टि हुई थी। यद्यपि वह परमेश्वर के रूप में सिरजा गया, तौभी उसके पाप ने उस रूप को बिगाड़ दिया है; और उससे न केवल परमेश्वर की सच्ची शांति परन्तु उसका सच्चा आनन्द, सच्चा विश्राम और सच्ची ज्योति जो उसे सच्चे मार्ग पर ला सकती है, छीन लिया है। उसी समय से, "जैसे हरिणी, नदी के जल के लिए हांफती है" वैसे ही मनुष्य का प्राण भी जीवते परमेश्वर के लिए हाँफता है।

भाई जार्डन खान ने अपनी अद्वितीय रीति से न केवल परमेश्वर की सच्ची शांति पाने का मार्ग दिखाया है, परन्तु सच्ची शान्ति और सांसारिक झूठी शान्ति में अन्तर भी दिखाया है। सच्ची शान्ति और आनन्द जिसके लिए मनुष्य का प्राण तड़पता है, वह केवल सृष्टिकर्त्ता और जगत के उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह, जिसने हमें पाप से मुक्त करने के लिए पाप का दण्ड सहा, केवल उसी से मिलता है।

मेरी आशा है कि यह छोटी सी पुस्तक बहुतों को सच्ची शाँति और विश्राम के स्रोत के पास पहुँचायेगी।

एच० इनॉक

प्रोफेसर आफ् जुअलॉजी
प्रेसिडेन्सी कालेज
मद्रास यूनिवर्सिटी

प्रथम अध्याय

सच्ची शांति

मनुष्यों ने सदा ही शांति प्राप्त करने का प्रयत्न किया है। वर्त्तमान युग में तो ऐसा लगता है कि वे उसे हर समय से अधिक चाहते हैं। शांति की तलाश में मनुष्यों की योजनाओं की खबर से अखबार भरे पड़े हैं। संसार के लगभग सभी देशों में लोग शांति प्राप्त करने के लिए व्याकुल हैं। कई देश अपने राजदूतों को एक देश से दूसरे देश में शांति की खोज में भेजते हैं। वे "शांति-मिशनों" में जाते हैं और "शांति सम्मेलन" आयोजित करते हैं। वे रेडियो पर शांति के विषय में बातें करते हैं। संयुक्त राष्ट्र में लोग सदैव ही शांति की बातें करते हैं। परन्तु क्या वे शांति पाने का कोई मार्ग पा सकते हैं? क्या संसार के देशों के मध्य में वास्तविक शांति है? हमारे युग में क्या किसी देश का शासक शांति कायम कर सकता है? संसार के नेतागण शांति के विषय में सदा बातें करते हैं, परन्तु वे इसे नहीं पा सके हैं। ऐसा क्यों? यह एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। शांति पाने के लिए मनुष्य के सभी प्रयत्नों के बावजूद भी हम संसार के लोगों में और भी गड़बड़ी तथा अशांति पाते हैं।

शांति का राजकुमार

संसार के नेतागण क्यों शांति नहीं पा सकते हैं? क्योंकि वे वास्तविक शांति-दाता, प्रभु यीशु मसीह के पास आये बिना ही शांति पाने का प्रयत्न कर रहे हैं। बाइबल में उसे 'शांति का राजकुमार' कहा

गया है और हमें यह बताया गया है कि उसकी शांतिपूर्ण प्रभुता का कभी अन्त नहीं होगा। (यशायाह ९:६,७)

प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों से यह अद्‌भुत प्रतिज्ञा की, "मैं तुम्हें शांति दिये जाता हूँ, अपनी शांति तुम्हें देता हूँ, जैसे संसार देता है मैं तुम्हें नहीं देता।" (यूहन्ना १४:२७)

दो प्रकार की शांति है। एक वह है जिसे प्रभु यीशु देता है : यह सच्ची शांति है, और यह चिरस्थायी है। दूसरी वह है जो संसार देता है : यह झूठी शांति है और यह अस्थायी है।

संसार के नेतागण शांति स्थापित करने की चेष्टा कर रहे हैं परन्तु सफलता उनके हाथ नहीं लग रही है। शांति पाने के लिए वे अपनी अक्ल दौड़ा रहे हैं, परन्तु उनकी आशा पर पानी फिर रहा है।

संयुक्त राष्ट्र सघ शांति स्थापित करने के प्रयत्न में अपना प्रभाव डालने की कोशिश कर रहा है, परन्तु संसार के चारों ओर उपद्रव बढ रहा है। एक प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ ने एक बार कहा, एक उलझी हुई दुनिया में मैं एक उलझा हुआ मनुष्य हूं।" राष्ट्रपति जॉनसन ने एक बार कहा, "हमारा राष्ट्र शांति चाहता है, हमारी सरकार शाति चाहती है, वियतनाम में हमारे लोग शांति चाहते हैं, हमारा राष्ट्रपति शांति चाहता है।" तब उन्होंने आगे कहा कि शांति तब तक नहीं मिल सकती है जब तक कि शत्रु भी शांति न चाहे।

हमारा भी एक शत्रु है। वियतनाम में वियतकांग अमरीकियों के लिए एक बड़ा शत्रु है परन्तु उससे अधिक बड़ा हमारा एक शत्रु है। और वह शत्रु पाप है। पुरुष और स्त्रियों के हृदय का पाप ही वास्तव में संसार के चारों ओर होने वाली गड़बड़ी का कारण है।

पाप, अशांति की मुख्य जड़ है

एक समय किसी मनुष्य ने अपने घर के अहाते में एक कंटीली झाड़ी

को बढ़ते हुए पाया। उसने हँसिया लिया और झाड़ी को ज़मीन के नज़दीक से काट कर अपने अहाते के बाहर फेंक दिया। परन्तु उसने झाड़ी की जड़ को नहीं उखाड़ा। शीघ्र ही झाड़ी पुनः बढ़ने लगी। उसमें और भी अधिक काँटे निकल आये।

संसार के नेतागण भी अपनी शांति की खोज में कुछ ऐसा ही कर रहे हैं। वे कंटीली झाड़ी को ऊपर से काटने की कोशिश कर रहे हैं, परन्तु वे जड़ को उखाड़ नहीं सकते हैं। हमारी सब गड़बड़ियों की जड़ हमारे हृदयों का पाप है। सुनिए कि बाइबल इसके विषय में क्या कहती है। "मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देने वाला होता है, उसमें असाध्य रोग लगा है; उसका भेद कौन समझ सकता है?" (यिर्मयाह १७:९)

"परन्तु दुष्ट तो लहराते हुए समुद्र के समान है जो स्थिर नहीं रह सकता; और उसका जल मैल और कीच उछालता है। दुष्टों के लिए शांति नहीं है, मेरे परमेश्वर का यही वचन है।" (यशायाह ५७ : २०, २१)

"और ध्यान से देखते रहो, ऐसा न हो, कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित रह जाय, या कोई कड़वी जड़ फूट कर कष्ट दे, और उसके द्वारा बहुत से लोग अशुद्ध हो जाएं।" (इब्रा० १२ : १५)।

एक समाचार पत्र में एक फौजी अफसर की आत्महत्या का समाचार लिखा था। वह कोई युद्ध-कैदी नहीं था। सेना में वह एक ऊँचे पद पर था। उसके पास एक सुन्दर बंगला और काफी धन था। वह रोज अच्छा भोजन किया करता था। परन्तु अन्त में उसने आत्महत्या की। इसका कारण उदासी, निराशा अथवा दुख हो सकता है। आज कल हम बहुधा आत्महत्याओं के विषय में पढ़ते हैं। यह तब तक होता रहेगा जब तक पुरुष और स्त्रियों के हृदय से पाप हटाया न जाये।

झूठी शांति

सन् १९१८ में प्रथम महायुद्ध समाप्त हुआ। उसी समय राष्ट्र संघ का निर्माण हुआ। मनुष्यों की आशा थी कि उनका दुःख दूर हो जायेगा और संसार में सर्वदा शांति होगी। तब सन् १९३९ में द्वितीय महायुद्ध का आरम्भ हुआ। इससे संसार के विभिन्न भागों में क्लेश फैला और बर्बादी हुई। बाइबल कहती है, "जब लोग कहते होंगे, कि कुशल है और कुछ भय नहीं, तो उन पर एकाएक विनाश आ पड़ेगा, जिस प्रकार गर्भवती पर पीड़ा; और वे किसी रीति से न बचेंगे।" (१ थिस्सलुनीकियों ५:३) यही बातें अब भी हो रही हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ शांति स्थापित करने की कोशिश कर रहा है। शांति-संधिपत्रों पर हस्ताक्षर किया जा रहा है, और लोग चिरस्थायी शांति की आशा रखते हैं। वे यह नहीं जानते हैं कि उससे भी बड़ी विपत्तियां आ रही हैं।

सन् १९३५ की एक रात "क्वेटा" शहर शांत और निस्तब्ध था। लोग चैन की नींद ले रहे थे।। अचानक एक भयंकर भूकम्प ने शहर को हिला दिया। लोग अपने बिस्तरों से गिर गये। मकान हिल गए और उनमें से बहुत से गिर गए। शहर में चारों ओर भय और पीड़ा के कारण चीखने और चिल्लाने लगे अनेकों लोग पृथ्वी में जीवित गड़ गये। उस समय जीवन और सम्पत्ति की बड़ी क्षति हुई।

संसार के लोग जिस शांति को पाने की कोशिश कर रहे हैं, वह भी ऐसी ही है। जब कोई शांति की योजना सफल होती दिखती है, तो वे सोचते हैं कि चिरस्थायी शांति मिल गई है, परन्तु वास्तव में यह शैतान का एक झूठ है। क्योंकि तभी किसी दूर शहर या गांव में गड़बड़ी आरम्भ होती है। कुछ ही समय में यह उस जिले में फैल जाती है और शीघ्र ही सारे देश में हलचल मच जाती है।

अनेकों 'वाद' भी गड़बड़ी का कारण हो सकते हैं। साम्यवाद, साम्प्रदायिकता, जातिवाद, नास्तिकता, आधुनिकतावाद तथा बुद्धिवाद उनमें से कुछ हैं। ये शांति को क्षति पहुँचाते हैं और चारों ओर मनुष्यों में गड़बड़ी उत्पन्न करते हैं।

सच्ची शांति

प्रभु यीशु शांति का राजकुमार कहलाता है, और केवल वह ही वास्तविक शांति दे सकता है जो चिरस्थाई है। मसीह के जन्म के सैकड़ों वर्ष पूर्व यशायाह नबी ने इसके विषय में कहा। (यशायाह ९:६,७) मसीह के इन शब्दों को सुनिये जो उसने लोगों से कहे, "हे सब थके और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।" यदि आप शांति के राजकुमार प्रभु यीशु को अपने हृदय में विश्वास से ग्रहण करेंगे तो वह आपको स्वर्गीय सच्ची और स्थायी शांति देगा।

दो चित्रकारों ने विश्राम एवं शांति को दर्शाने के लिए चित्र बनाया। एक ने पहाड़ों के बीच एक शांत झील का चित्र बनाया। यह संसार से मिलने वाली झूठी शांति का चित्र है। एक आँधी इस शांति को भंग कर सकती है। बड़ी बड़ी लहरें उठेंगी और वे छोटी नावें जो झील में हैं, तुरन्त खतरे में पड़ जाएंगी। संसार के लोगों के पास जब स्वास्थ्य, धन, अच्छी नौकरी आदि भौतिक सुख के साधन होते हैं तब वे शांति का अनुभव करते हैं। परन्तु यदि उन्हें धन, स्वास्थ्य, मित्र अथवा नौकरी से हाथ धोना पड़े तो उनकी शांति भी उनसे छिन जाती है और वे व्याकुल हो जाते हैं।

दूसरे चित्रकार ने एक बड़े झरने का चित्र बनाया। ठीक पानी के फुहारे के पास ही एक पतला सा पेड़ था। उस पेड़ की एक डाली पर एक चिड़िया अपने घोंसले में शांत बैठी हुई थी। यह उस शांति के समान है जो प्रभु यीशु उन्हें देता है जो उस पर विश्वास रखते है।

तकलीफों में भी मसीह के सच्चे विश्वासियों के हृदय में परमेश्वर की शांति बनी रहती है। पीड़ा, दुःख तथा जीवन की सभी विपत्तियों में भी यह स्थिर रहती है। मसीह में—जो एक दृढ़ गढ़ के समान है—विश्वासी सच्ची शांति को पहिचान सकता है।

मैं आपको दो अमरीकियों की कहानी बताता हूं। "रेक्स बीच" एक प्रसिद्ध लेखक था। उसने तैंतीस उपन्यास लिखे जिनमें से चौदह के चलचित्र बन चुके हैं। जब वह ७१ वर्ष का था, उसके अन्तिम उपन्यास को चलचित्र बनाने के हेतु स्वीकृति देने के लिए उसे १,०००,००० डालर मिले। वह एक धार्मिक व्यक्ति था और अपने धर्म के अनुसार जीवन व्यतीत करने की कोशिश करता था। तब एक दिन उसे पता चला कि उसे गले का केन्सर हो गया है। भोजन और श्वाँस लेने के लिए सर्जनों को उसके गले में नली लगानी पड़ी। वह लगातार पीड़ा में रहता था। ऑपरेशन तथा दवाइयों ने दर्द कम करने में कोई अधिक सहायता नहीं दी। अतएव तारीख ७ दिसम्बर १९४७ को बन्दूक की गोली से उसने अपने जीवन का अन्त कर दिया। उसके पास धन था परन्तु शांति का राजकुमार मसीह उसके हृदय में नहीं रहता था। ऐसे महान् व्यक्ति का कैसा दुखदायी अन्त हुआ।

अब दूसरे अमरीकी की सच्ची कहानी सुनिये। वह एक सैनिक था और युद्ध में घायल हो गया था। एक अफसर ने उसे तब देखा जब वह मरने वाला था।

"क्या मैं तुम्हारे लिये कुछ कर सकता हूं?" अफ़सर ने पूछा।

"कुछ नहीं, महाशय, धन्यवाद," सैनिक ने उत्तर दिया।

"क्या मैं तुम्हारे लिए थोड़ा पानी लाऊँ?" अफ़सर ने फिर पूछा।

"जी नहीं, धन्यवाद, महाशय मैं मरने वाला हूं।" उस व्यक्ति ने उत्तर दिया।

"क्या कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो मैं तुम्हारे लिए कर सकता हूँ ? क्या मैं तुम्हारे मित्रों को तुम्हारे विषय में लिख सकता हूं ?" अफ़सर ने फिर पूछा ।

"मेरा कोई ऐसा मित्र नहीं है जिसके पास आप लिख सकते हैं । परन्तु एक काम आप कर सकते हैं । उस थैले में आप मेरा 'नया नियम' पायेंगे (नया नियम बाइबल का दूसरा मुख्य भाग है ।) कृपया उसे लाइये और यूहन्ना रचित सुसमाचार का चौदहवां अध्याय खोलिये । उसके क़रीब अन्तिम हिस्से में आप एक पद पायेंगे जो ऐसे शुरू होता है, 'मैं तुम्हें शांति दिए जाता हूँ ।' कृपया उसे मेरे लिए पढ़िए ।" सैनिक ने कहा ।

अफ़सर ने नए नियम में वह स्थान खोज निकाला और पढ़ने लगा ।

"मैं तुम्हें शांति दिए जाता हूँ, अपनी शांति तुम्हें देता हूँ; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता; तुम्हारा मन न घबराये और न डरे ।" (यूहन्ना १४:२७)

"धन्यवाद, महाशय, धन्यवाद । मेरे पास वह शांति है—मैं मुक्ति-दाता के पास जाता हूँ ।" उस मरते हुये सैनिक ने कहा ।

कुछ क्षण बाद उसकी आत्मा ने उसके घायल शरीर को छोड़ दिया । इन दो व्यक्तियों के मध्य महान् अन्तर पर विचार कीजिये । पहिले ने मसीह को अपना उद्धारकर्त्ता नहीं बनाया : उसने स्वयं ही अपने जीवन का अन्त कर लिया । दूसरे के हृदय में मसीह, शांति का राजकुमार था । यद्यपि वह बुरी तरह घायल हो गया था तौभी शांति से मरा । विश्वासी तथा अविश्वासी में यह एक महान् अन्तर है ।

जिस समय प्रभु यीशु का जन्म हुआ उस समय परमेश्वर का एक वृद्ध जन यरूशलेम शहर में रहता था । उसका नाम शिमौन था । वह यह जानता था कि उसे शीघ्र ही मरना है । जब उसने बालक यीशु को

अपने हाथों में लिया उसने परमेश्वर को धन्यवाद दिया :

"हे स्वामी, अब तू अपने दास को अपने वचन के अनुसार शांति से विदा करता है; क्योंकि मेरी आँखों ने तेरे उद्धार को देख लिया है।" (लूका २:२९-३०)

क्या आपने परमेश्वर के उद्धार को मसीह में देखा और ग्रहण किया है ? क्या आपने अपने पापों से पश्चात्ताप किया है और विश्वास के द्वारा प्रभु यीशु मसीह को अपने हृदय में ग्रहण किया है ? यदि आप ऐसा करेंगे तो वह अर्थात् शांति का राजकुमार आपके हृदय में आएगा। वह आपके हृदय को सच्ची शाँति से भर देगा जो सर्वदा आपके साथ रहेगी।

सात गुणा शांति

बाइबल में कम से कम सात विभिन्न रीतियों से इस सच्ची शांति को दिखाया गया है।

"मसीह की शांति" (कुलुस्सियों ३:१५)

महान् शांति" (भजन संहिता ११९:१६५)

"पूरी शांति" (यिर्मयाह ३३:६)

"पूर्ण शांति" (यशायाह २६:३)

"नदी की नाईं शांति" (यशायाह ६६:१२)

"परमेश्वर की शांति जो समझ से बिलकुल परे है" (फिलिप्पियों ४:७)

"अन्त न होने वाली शांति (यशायाह ९:७)

कैसे आप इस अद्‌भुत शांति को अपने हृदय में पा सकते हैं ? अपने पैसों को खर्च करके आप इसे नहीं पा सकते हैं। शारीरिक अभिलाषाओं की तृप्ति अथवा धार्मिक रीति-रस्मों की पूर्ति के द्वारा भी यह आपको

नहीं मिल सकती है। परन्तु यादि आप प्रभु यीशु मसीह को जो शान्ति का राजकुमार है, अपने हृदय में ग्रहण करेंगे, तो वह आपको यह अद्‌भुत शांति देगा।

क्रूस बोझ को हटाता है।

जॉन बन्यन अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'यात्रा सप्नोदय' (Pilgrim's Progress) में इस विषय पर बोलता है। अपने स्वप्न में उसने एक मनुष्य को फटे कपड़े पहिने हुए, हाथ में एक पुस्तक और पीठ पर एक भारी बोझ लिए हुए देखा। ज्यों-ज्यों वह पुस्तक पढ़ता था त्यों-त्यों वह थरथराता और कांपता था और कहता था, "मैं क्या करूँ?" (प्रेरितों १६:३० को देखिये) जब वह घर पहुंचा तो और भी अधिक घबरा गया। जब उसने अपनी पत्नी और बच्चों से कहा तो उन्होंने उसकी कोई चिन्ता नहीं की। अतएव वह अकेला ही खेतों में चलने लगा। पुस्तक (बाइबल) को पढ़कर वह बहुत ही घबरा गया और चिल्ला उठा, "उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूँ?" उसने इधर-उधर ऐसे देखा मानो भागना चाहता हो, परन्तु वह यह नहीं समझ सका कि किस ओर जाऊँ।

तब 'प्रचारक' नामक एक व्यक्ति उसके पास आया और उससे पूछा, "तुम क्यों रोते हो?" उसने उत्तर दिया, "महाशय, इस पुस्तक को पढ़ने से मुझे मालूम हुआ कि मेरी मृत्यु होगी और उसके बाद मेरा न्याय होगा और मैं उसके लिए तैयार नहीं हूँ।" (इब्रा० ९:२७) प्रचारक ने उसे एक पत्रक दिया। उस पर यह लिखा हुआ था, "आने वाले क्रोध से भागो।" (मत्ती ३:७) यह पढ़ कर उस व्यक्ति ने प्रचारक की ओर ध्यान से देखा और पूछा, "मैं किधर जाऊँ?" प्रचारक ने एक चौड़े खेत के ऊपर इंगित करते हुए कहा, "क्या तुम्हें वहाँ एक सकेत फाटक दिख रहा है?" (मत्ती ७:१३,१४) वह व्यक्ति फाटक तो नहीं देख पा रहा था परन्तु उसे लगा कि वह कुछ प्रकाश देख पा

रहा है। (भजन संहिता ११६:१०५) प्रचारक ने कहा, "अपनी आंखें उस ज्योति पर लगाये रखो और सीधे उसी की ओर बढ़ते जाओ तो तुम्हें फाटक दिखेगा। जब तुम वहां खटखटाओगे तब तुम्हें कोई बतलाएगा कि आगे क्या करना है।" जब वह आगे बढ़ा तो उसे कई लोग मिले और उनमें से एक भरमाने की कोशिश करने लगा। परन्तु अन्त में वह उस सकेत फाटक तक पहुंच गया। 'सुइच्छा' नामक व्यक्ति ने उसके लिये फाटक खोला। उस बोझ से दबे हुए व्यक्ति ने जिसका नाम 'मसीही' था, उससे पूछा कि क्या वह उसके पीठ से बोझ को उतारने में सहायता पहुंचा सकता है। परन्तु सुइच्छा ने उसे तब तक धैर्य धरने को कहा जब तक वह उस स्थान तक न पहुँच जाय जहां बोझ स्वय उसके पीठ से लुढ़क जाएगा।

तब 'मसीही', 'अदुवादक' के घर गया। 'अनुवादक' नें उसे कई वस्तुए दिखाईं और सही मार्ग बताया। वह मार्ग जिस पर 'मसीही' चलने लगा 'उद्धार' कहलाता था और उसके दोनों ओर दिवालें थीं। उसने दौड़ने की कोशिश की, परन्तु पीठ के बोझ के कारण दौड़ न सका।

जल्दी-जल्दी चलता हुआ वह एक पहाड़ तक पहुंचा जिस पर एक क्रूस खड़ा था। उस पहाड़ में नीचे एक कब्र थी। जैसे ही 'मसीही' क्रूस के पास पहुंचा उसका बोझ उसके कधों से खुल गया और पीठ से गिरकर लुढ़कता हुआ पहाड़ के नीचे चला गया। वहां वह एक कब्र में गिर गया और फिर कभी नहीं दिखा।

'मसीही' अपने बोझ से स्वतंत्र होकर आनन्दित था और अहलादित हृदय से कहने लगा, "अपनी मृत्यु के द्वारा उसने मुझे विश्राम दिया है।" तब वह थोड़ी देर वहाँ खड़ा देखता और आश्चर्य करता रहा। उसे अचम्भा हो रहा था कि क्रूस पर देखने मात्र ही से वह अपने बोझ से स्वतन्त्र हो गया।

जब वह वहां खड़ा देख रहा था, उसकी आंखों से आँसू बह रहे थे। तभी तीन व्यक्ति उसके पास आये। उनमें से प्रत्येक श्वेत वस्त्र, पहिने था। उन्होंने उसे अभिवादन किया और पहिले ने उससे कहा "तुम्हारे पाप क्षमा हुए।" (मरकुस २:५) दूसरे ने 'मसीही' के फटे कपड़ों को उतारा और उसे एक नया वस्त्र पहिनाया (जकर्याह ३:४) तीसरे ने उसके माथे पर एक छाप लगाई (इफि० १:१३) और उसके हाथ में कागज का एक मुहर लगा हुआ पत्रक दिया : उसने 'मसीही' से कहा कि वह उस पत्रक को मार्ग में देखे। जब वह स्वर्गीय शहर में पहुंचे तब स्वर्गीय फाटक पर इसे दिखाए। वे लोग जो चमकीले वस्त्र पहिने थे, चले गये, परन्तु 'मसीही' आनन्द विभोर होकर उछलने लगा। मार्ग पर चलता हुआ वह गाने लगा।

"धन्य क्रूस ! धन्य कब्र ! धन्य वह व्यक्ति जो मेरे खातिर लज्जित हुआ।"

क्रूस के पास आते ही पाप का वह भारी बोझ जो यह मनुष्य उठाये फिर रहा था, अपने आप गिर गया। यह क्रूस वह लकड़ी पीतल, सोना या चाँदी का क्रूस नहीं है जिसे कोई व्यक्ति गिर्जेघर के ऊपर खड़ा करे अथवा अपने गले में लटकाये। इसका अर्थ क्रूस-मूर्त्ति अथवा क्रूस पर मरते हुए मसीह का चित्र भी नहीं है। ये चीज़ें हमारे पापों को दूर नहीं कर सकती हैं। क्रूस हमें स्मरण दिलाता है कि प्रभु यीशु को हमारे पापों के कारण क्रूस पर प्राण देना पड़ा था। जब एक पापी पश्चाताप करता है और अपने हृदय से विश्वास करता है कि मसीह पापों के लिए मरा, तब वह आत्मा में कलवरी के क्रूस के पास आता है। मसीह का खून उसे सब पापों से शुद्ध करता है और वह चिरस्थाई स्वर्गीय शांति पाता है। प्रभु यीशु ने स्वयं कहा "हे सब थके और बोझ से दबे लोगों मेरे पास आओ, और मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।" (मत्ती ११:२८) अपने पापों से पश्चाताप कीजिये। प्रभु यीशु

के पास आइये। अपना सम्पूर्ण भरोसा उस पर रखिये। वह पाप के बोझ को दूर करेगा और स्वर्गीय शांति से आपके हृदय को भर देगा।

क्रूस और सच्ची शांति

कैसे मसीह का क्रूस उस पर विश्वास करने वालों के हृदयों में शांति ला सकता है?

बाइबल कहती है:

"निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुःखों को उठा लिया; तौभी हमने उसे परमेश्वर का मारा कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शांति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएं।" (यशायाह ५३:४,५)

हमारे पापों के कारण हमारे हृदयों में शोक और दुःख होता है। परन्तु मसीह ने हमारे दुःखों को उठा लिया है। वह हमारे कारण घायल किया गया, उस पर ताड़ना पड़ी, उसने कोड़े खाये। हमारे पापों के कारण उसने अपना बहुमूल्य लोहू बहाया और क्रूस पर मरा। इसी कारण उसका खून हमें सब पापों से शुद्ध कर सकता है। (१ यूहन्ना १:७)।

जब हम यह जानते हैं कि मसीह के खून से हमारे सब पाप धुल गये, हमारा दुःख और संताप भी दूर हो जाता है। पाप से दुख और संताप होता है, जब मसीह का खून हमारे पापों को दूर करता है तब दुख और संताप के बदले हमारे हृदय में आनन्द और शांति होते हैं।

उसने कोड़े खाये·····और हम चंगे हुए। सैनिकों ने निर्दयता से उसकी पीठ पर कोड़े मारे। यह उन दुखों में से एक था जिसे प्रभु यीशु ने क्रूस पर मरने के पहिले सहा। परन्तु उसकी यातना और मृत्यु

के द्वारा हम पाप के घावों से चंगे होते हैं। यशायाह १:६ में भविष्य-द्वक्ता कहता है कि इस्राएल का पाप, चोट और सड़े हुए घावों के समान है। परन्तु मसीह महान् आत्मिक वैद्य है हमें पाप के घावों से चंगा करने के लिए वह घायल किया गया और मारा गया। पाप के घावों के ऊपर लगाने के लिये उसका रक्त मल्हम के समान है। अस्वस्थ, पीव से भरा हुआ घाव दुःखदायी होता है। पाप हमारे हृदयों में दुःख लाता है। जब मसीह अपने रक्त के द्वारा हमें पापों से शुद्ध करता है, हमें शांति और चैन हृदयों में मिलता है। हम जानते हैं कि हम पाप के रोग से चंगे हुए हैं। अभी प्रभु यीशु के पास आइये। वह आपको आपके पापों से शुद्ध और चंगा करेगा और आपके हृदय में चैन और शांति देगा।

शोक से शांति तक

लूका ७:३७-५० में हम एक स्त्री के विषय में पढ़ते हैं। वह एक पापी व्यभिचारिणी स्त्री थी। उसके पापमय जीवन ने उसे दुखी और अशान्त बना दिया था। वह दुख का भारी बोझ ढोये फिरती थी। वह प्रभु यीशु के पास मुक्ति और शांति की खोज में आई। जैसे आग की भट्टी में लोहा पिघलता है वैसे ही प्रभु यीशु की पवित्रता की आग में उसका हृदय पिघल गया। उसने अनुभव किया कि वास्तव में वह एक बड़ी पापिनी स्त्री है। उसकी आंखों से आंसू बहने लगे जब वह अपने पापों से मुड़ने लगी। प्रभु यीशु ने उससे कहा: "तेरे पाप क्षमा हुए। तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया है, कुशल से चली जा।" (लूका ७:४८,५०) इस क्रम पर ध्यान दीजिये: क्षमा, मुक्ति और शांति। उसके व्यभिचार के कामों ने उसके जीवन को उदासी से भर दिया था। परन्तु जब प्रभु यीशु ने उसके पाप क्षमा किए और उसकी शक्ति से उसे बचाया तब उसने उसकी उदासी के कारण को दूर किया और उसे शांति दी।

यदि किसी व्यक्ति के पैर में कांटा चुभा हुआ हो, तो उससे पीड़ा होती है। वह रात में नहीं सो सकता है। परन्तु जब काँटा निकाल दिया जाता है तब दर्द खतम होता है और वह फिर चैन से सो सकता है। इस स्त्री की अभिलाषाएं उसके हृदय में कांटों के समान थीं। वे उसके विवेक पर चुभते थे। जब प्रभु यीशु ने उसके पापों को क्षमा किया और उनसे उसे बचाया, तब उसके हृदय से काँटों को निकाला और उसे शांति दी।

आप भी इस स्त्री के समान प्रभु यीशु के पास आ सकते हैं। आप भी अपने सारे पापों से पश्चात्ताप कर सकते हैं और उस पर अपना सारा विश्वास रख सकते हैं। वह आपके पाप क्षमा करेगा, उनसे आपका उद्धार करेगा और आपको शांति देगा। उस पर ताड़ना पड़ी कि हमको शांति मिले; उसका लोहू हमें सब पापों से शुद्ध कर सकता है। जब वह हमारे पापों को दूर करता है तो वह हमारे बोझ और दुखों को भी दूर करता है और हमें अपनी ईश्वरीय शांति देता है। अभी इसी समय आप अपना भरोसा उस पर रखें और आप स्वयं अपने अनुभव से यह जान लेंगे कि ये बातें सच्ची हैं।

मसीह आँधी को शांत करता है—मत्ती, मरकुस और यूहन्ना, सब हमें यह बताते हैं कि किस प्रकार प्रभु यीशु ने यह किया।

एक संध्या को प्रभु यीशु ने अपने चेलों को गलील की झील के उस पार कफरनहुम शहर को अपनी नाव पर चढ़कर जाने की आज्ञा दी। जब वे जा रहे थे तो रात हो गई और वे मार्ग से भटक गये। तभी हवा ज़ोरों से बहने लगी और आंधी आ गई। नाव लहरों में थपेड़े खाने लगी। शिष्यों ने नाव खेने की शक्ति भर चेष्टा की, परन्तु वे नाव को निर्दिष्ट दिशा की ओर बढ़ाने में असमर्थ रहे। उन्होंने अपने आपको पूर्णतः असहाय पाया। अचानक वे प्रभु यीशु को तूफानी लहरों पर चल कर आते देख कर चकित हो गये। जब पतरस ने

पहिचाना कि प्रभु ही उसकी ओर आ रहा है तो वह उत्तेजित हो उठा। उसने प्रभु से चाहा कि वे उसे नाव से उतर कर पानी पर चलकर उनके पास आने की आज्ञा दें। प्रभु ने पतरस को आने को कहा। पतरस पानी में कूद पड़ा और प्रभु यीशु की ओर चलने लगा। जब तक उसकी आँखें प्रभु पर लगी रहीं तब तक चलने में कोई तकलीफ नहीं हुई। परन्तु जैसे ही उसने आँधी और लहरों को देखा वह डर गया। उसने विश्वास खो दिया और डूबने लगा। तब वह चिल्ला उठा, "हे प्रभु, बचा।" तुरन्त ही प्रभु ने उसका हाथ पकड़ लिया। उसे पानी के ऊपर किया, और नाव में ले गया। दूसरे शिष्यों ने आनन्द से नाव में उसका स्वागत किया। जैसे ही प्रभु और पतरस नाव पर चढ़े आंधी शांत हो गई। प्रभु यीशु को आंधी का भय नहीं था। वह लहरों पर उसी तरह चला जैसे भूमि पर। वह समुद्रों का स्वामी है। वह आंधी का अधिपति है। वह न केवल बाहरी आंधी को, परन्तु इस संसार के पुरुष और स्त्रियों के हृदय में उठने वाली आंधी को भी शांत कर सकता है। (मत्ती १४:२२-३३; यूहन्ना ६:१६-२१)।

एक और समय की बात है—प्रभु यीशु और उसके शिष्य गलील की झील में नाव पर चढ़ कर जा रहे थे। प्रभु यीशु सो रहा था। "तब बड़ी आंधी आई, और लहरें नाव पर यहाँ तक आने लगीं कि वह अब पानी से भरी जाती थी।" (मरकुस ४:३७) शिष्यों ने प्रभु को जगाया और कहा, "हे गुरु, क्या तुझे चिंता नहीं, कि हम नाश हुए जाते हैं? तब उसने उठकर, आंधी को डांटा और पानी से कहा 'शांत रह, थम जा': और आंधी थम गई और बड़ा चैन हो गया।" (मरकुस ४:३८,३९)

मेरे मित्रो! क्या आपके हृदय में आँधी चल रही है? क्या पाप ने आपके हृदय की शांति भंग कर दी है? क्या आप व्यभिचार, मूर्त्तिपूजा,

टोन्हा, द्वेष, झगड़ा, जलन, ईर्ष्या, मद्यपान, जुआ, धोखाबाजी, चोरी, घूस, काला बाज़ार और दूसरी गंदी आदतों के कारण घबराये हैं ? क्या आप परमेश्वर के विरुद्ध बलवा कर रहे हैं ? इन चीज़ों ने चारों ओर लोगों के हृदयों में तूफान उठाया है। पाप उस घबराहट और भय की आंधी को उठाता है जिसे हम संसार के चारों ओर लोगों के जीवनों में देखते हैं।

स्मरण रखिये, प्रभु यीशु आँधियों के ऊपर अधिकार रखता है। वह गलील की झील की तूफानी लहरों पर चल सका था। जैसे ही शिष्यों ने नाव पर उसका स्वागत किया, चैन और शांति वहाँ आई। यदि पाप—बुरे विचार, गंदी आदतें और घमण्ड—ने आपके हृदय में आँधी उठाई है तो अपने भले कर्मों अथवा धर्म के द्वारा उससे बचने की कोशिश मत कीजिये। उससे आप और अधिक विपत्ति और बेचैनी में डूबेंगे। तुरन्त प्रभु यीशु को पुकारिये, जैसे शिष्यों ने उसे अपनी नाव में ग्रहण किया, वैसे ही आप उसे अपने हृदय और जीवन में ग्रहण कीजिये। वह आप को बचायेगा। वह आपके हृदय की आँधी को शांत करेगा और आपको आपके हृदय में विश्राम और शांति देगा। वह न केवल आँधी का अधिपति है परन्तु वह शांति का राजकुमार भी है।

"तब वे संकट में यहोवा की दोहाई देते हैं,"
और वह उनको सकेती से निकालता है।
वह आँधी को थाम देता है
और तरंगें बैठ जाती हैं

तब वे उनके बैठने से आनन्दित होते हैं, और वह उनको मन चाहे बन्दर स्थान में पहुँचा देता है। (भजन संहिता १०७:२८-३०)

द्वितीय अध्याय

सच्चा आनन्द

दो प्रकार के आनन्द हैं। एक है झूठा आनन्द जो बाहरी और सांसारिक है। यह मनुष्यों को धोखा देता है और क्षणिक है। दूसरा वास्तविक आनन्द है। यह असली है और चिरस्थाई होता है। आइये हम इन दोनों पर विचार करें।

झूठा आनन्द

एक दिन एक व्यक्ति एक डॉक्टर के पास गया। उसने कहा "डॉक्टर साहब, मैं अप्रसन्न हूं और अकेलापन महसूस करता हूँ। क्या आप मेरी सहायता कर सकते हैं ?"

उस समय उस शहर में एक सर्कस आया था। उसमें एक जोकर था जो ऐसा तमाशा करता था कि सबसे नाखुश व्यक्ति भी हसना आरम्भ कर देता था। चिकित्सक ने अपने मरीज को सर्कस में जाकर उसे जोकर के तमाशों को देखने को कहा। चिकित्सक ने सोचा कि इससे वह खुश हो जायेगा।

मरीज़ ने चिकित्सक की ओर देखते हुये कहा "**मैं ही वह जोकर हूँ।**" यह व्यक्ति जो दूसरों को हंसा सकता था, स्वयं उदास था और अकेला था। उसका आनन्द झूठा आनन्द था।

अनेक युवक जो सिनेमा जाते हैं, यह सोचते हैं कि सिनेअभिनेता-अभिनेत्री संसार में सबसे आनन्दित पुरुष स्त्री हैं। परन्तु यह असत्य है। अनेक सिने-कलाकारों ने आत्महत्या की है। एक प्रसिद्ध अभिनेत्री ने

एक बार कहा, "मैं धनी हूं, सुन्दर और प्रसिद्ध हूं। मुझे संसार में सब से आनन्दित स्त्री होना चाहिये। परन्तु मैं बहुत नाखुश हूँ। ऐसा क्यों ?

सांसारिक आनन्द, भारतवर्ष में जून महीने की वर्षा के समान है। जब तक पानी बरस रहा है तब तक सब कुछ ठण्डा मालूम पड़ता है। परन्तु ज्यों ही वर्षा रुक जाती है और बादल हट जाते हैं त्यों ही आबहवा उमसदार होने लगती है जमीन कींच-कींच और गन्दी हो जाती है साँसारिक आनन्द ऐसा ही है। यह थोड़े समय का होता है। परमेश्वर की दृष्टि में हृदय को दूषित कर देता है। अन्त में जीवन नीरस और बेचैन हो जाता है। यह मरुभूमि में मृगतृष्णा के समान है।

कुछ समय पहिले एक व्यक्ति यूरोप से अमरीका गया। वह एक अमरीकी घर में गया। गैरेज में तीन मोटरें थीं। एक सुन्दर बैठक कमरा था जिसमें रंगीन टेलिविजन सेट लगा हुआ था। रसोई घर बिजली के सब सामानों से सुसज्जित था। बाहर तैरने के लिए एक सुन्दर तालाब था। परन्तु गृहणी एक पुस्तक पढ़ रही थी जिसका शीर्षक था "आनन्दित कैसे हों !" सब धन सम्पत्ति होने पर भी वह खुश नहीं थी। उसका आनन्द झूठा था।

राजा सुलेमान अपने समय का सबसे धनी व्यक्ति था। परन्तु साँसारिक चीजों ने उसे आनन्द नहीं दिया। पढ़िये कि वह उनके संबध में क्या कहता है :

"मैंने बड़े-बड़े काम किये; मैंने अपने लिए घर बनवा लिये और अपने लिये दाख की बारियाँ लगवाईं; मैंने अपने लिये बारियां और बाग लगवा लिये, और उसमें भांति-भांति के फल के वृक्ष लगाए। मैंने अपने लिये कुण्ड खुदवा लिये कि उनसे वह बन सींचा जाय जिसमें पौधे लगाये जाते थे। मैंने दास और दासियां मोल लीं, और मेरे घर में दास भी

उत्पन्न हुये; और जितने मुझ से पहिले यरूशलेम में थे उनसे कहीं अधिक गाय बैल, और भेड़-बकरियों का मैं स्वामी था। मैंने चाँदी और सोना और राजाओं और प्रांतों के बहुमूल्य पदार्थों का भी संग्रह किया; मैंने अपने लिये गवैयों और गाने वालियों को रखा, और बहुत सी कामिनियाँ भी, जिनसे मनुष्य सुख पाते हैं, अपनी कर लीं। इस प्रकार मैं अपने से पहिले के सब यरूशलेमवासियों से अधिक महान् और धनाढ्य हो गया; तौभी मेरी बुद्धि ठिकाने रही।

और जितनी वस्तुओं को देखने की लालसा मैंने की, उन सभों को देखने से मैं न रुका; मैंने अपना मन किसी प्रकार का आनन्द भोगने से न रोका क्योंकि मेरा मन मेरे सब परिश्रम के कारण आनन्दित हुआ; और मेरे सब परिश्रम से मुझे यही भाग मिला। तब मैंने फिर से अपने हाथों के सब कामों को और अपने सब परिश्रम को देखा, तो क्या देखा कि **सब कुछ व्यर्थ और वायु को पकड़ना है, और संसार** में कोई लाभ नहीं है।" (सभोपदेशक २:४—११) अपने ही अनुभव से सुलेमान ने पाया कि हंसी पागलपन था और मनोरंजन से कुछ सिद्ध नहीं होता। उसका 'आनन्द का समय' व्यर्थ सिद्ध हुआ।

क्या आपने कभी चूहादान देखा है? जो व्यक्ति उसमें चूहा फंसाना चाहता है रोटी का एक टुकड़ा उसमें बांध देता है। चूहा रोटी देखता है और उसे खाना चाहता है। वह उस छोटे द्वार से भीतर जाता है और जैसे ही रोटी खाने के लिए उस पर झपटता है द्वार तुरन्त बन्द हो जाता है। अब चूहा बाहर नहीं निकल सकता। वह चूहेदान के भीतर तब तक इधर-उधर भागता है जब तक वह व्यक्ति जिसने चूहादान लगाया आकर उसे मार नहीं देता है। चूहे को रोटी खाते समय थोड़ा आनन्द मिला। परन्तु उसे यह नहीं मालूम हो पाया कि वह तो एक फन्दा था। सांसारिक सुख और विलास उस जाल का चारा है जिसे शैतान मनुष्यों को फंसाने और नाश करने के लिए

बिछाता है। काश कि प्रभु आपको दिखाये कि आप कैसे शैतान के घातक फन्दों से बच सकते हैं।

सच्चा आनन्द

अभी हमने झूठे आनन्द के विषय में देखा। अब आइये हम सच्चे आनन्द के विषय में देखें। यह आनन्द स्वर्ग से आता है और चिर-स्थायी है : कैसे हम इस आनन्द को पा सकते हैं ?

परमेश्वर, स्वर्ग एवं मनुष्य की आत्मा के विषय में सत्य को प्रगट करने के लिये प्रभु यीशु बहुधा दृष्टान्तों को काम में लाया करता था। इसका एक उदाहरण हमें यूहन्ना रचित सुसमाचार के पन्द्रहवें अध्याय में मिलता है। वहां प्रभु यीशु ने कहा, "सच्ची दाखलता मैं हूं।" अर्थात् वह ही सच्चे आनन्द का उद्गम स्थान है। वे जो उस पर विश्वास करते हैं दाख की डालियों के समान हैं। इसी कारण उसने अपने शिष्यों से कहा, "मैं दाखलता हूं और तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल लाता है; मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।" (यूहन्ना १५:५) प्रभु यीशु का शिष्य—जो उस पर पूर्ण विश्वास रखता है और उसकी आज्ञाओं का पालन करता है -पूर्ण आनन्द पाता है। उसने अपने शिष्यों से कहा, "मैंने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं, कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाय।" (यूहन्ना १५:११) वे बातें जो उसने उनसे कहीं यूहन्ना १५:१-१० में लिखी हैं। दाखलता के विषय में जो कुछ उसने कहा वह इसलिये था कि अपने शिष्यों को यह दिखाये कि वास्तविक और सच्चे आनन्द का स्रोत मात्र वह ही है। जो मसीह पर विश्वास करते हैं वे इस सम्पूर्ण आनन्द में भाग ले सकते हैं। वे विश्वास के द्वारा उससे जुट जाते हैं। आप भी यदि मसीह पर अपना भरोसा रखें तो सच्चे और स्वर्गीय आनन्द का उपभोग कर सकते हैं। यह आनन्द जो वह विश्वासी को

देता है वह उसका अपना है। (यूहन्ना १५:११) यह एक आंतरिक आनन्द है जो सभी सच्चे विश्वासियों के हृदय में आता है। यह आनन्द हृदय में बना रहता है; सांसारिक आनन्द के समान यह आता-जाता नहीं है। उसका आनन्द पूर्ण है; वह हमारे हृदयों के कटोरों को आनन्द से तब तक भरता है जब तक उमड़ न जाय। (भजन संहिता २३:५) प्रभु का आनन्द जो हमारे हृदयों में बहता है हमारे हृदयों से उमड़ कर दूसरों तक बह सकता है।

दुखों के मध्य आनन्द

प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "और तुम्हें भी अब तो शोक है, परन्तु मैं तुम से फिर मिलूंगा, और तुम्हारे मन में आनन्द होगा और तुम्हारा आनन्द कोई तुम से छीन न लेगा।" (यूहन्ना १६:२२) इस प्रकार का आनन्द और सच्ची खुशी प्रभु यीशु अपने लोगों को देता है।

महायाजक ने पतरस और दूसरे प्रेरितों को बन्दीगृह में डाल दिया था। यहूदियों की महासभा ने उनको कोड़े लगाये और आज्ञा दी कि यीशु के नाम में कभी प्रचार न करे। परन्तु चेले उदास और हतोत्साह नहीं हुए। "वे इस बात से आनन्दित होकर महासभा के सामने से चले गये, कि हम उसके नाम के लिये निरादर होने के योग्य तो ठहरे।" (प्रेरितों ५:४१) फिलिप्पी में रोमी अधिकारियों ने पौलुस और सीलास के वस्त्र फाड़े और उन्हें जोरों से पीटा। वे बन्दीगृह में डाल दिये गये। दारोगा ने उनके पांव काठ (शिकंजे) में ठोंक दिए। मुझे निश्चय है कि शैतान ने यह सोचा होगा कि इन अनुभवों से वे उदास हो जायेंगे और शायद परमेश्वर की निन्दा करेंगे। लेकिन उन्होंने क्या किया? "आधी रात के लगभग पौलुस और सीलास प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के भजन गा रहे थे, और बन्धुए उनकी सुन रहे थे।" (प्रेरितों १६:२५) दारोगा यह देखकर अचम्भित हो

गया कि ऐसे दुखदायी अनुभवों के बाद भी ये लोग आनन्दमग्न हैं। उसने अपनी आँखों से परमेश्वर के उस सामर्थ को देखा जिसने उनको ऐसे अद्‌भुत हर्ष से भर दिया था। जब भूकम्प ने बन्दीगृह को हिला दिया, वह जान गया कि ये मनुष्य उसे बता सकते थे कि उद्धार पाने के लिये उसे क्या करना है। उद्धार का वह आनन्द जो पौलुस और सीलास से था, वह दारोगा और उसके परिवार के हृदयों में बहकर चला गया। वह और उसका परिवार आनन्द से भर गया, क्योंकि अब वे परमेश्वर पर विश्वास करते थे। "और उसने उन्हें अपने घर ले जाकर, उनके आगे भोजन रखा और सारे घराने समेत परमेश्वर पर विश्वास करके आनन्द किया।" (प्रेरित १६:३४) कोई भी शारीरिक पीड़ा उस आनन्द को दूर नहीं कर सकी। प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों से कहा था कि कोई भी उनसे उसके आनन्द को छीन नहीं सकता—और उसने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की।

जब पौलुस और बरनबास पिसिदिया के अन्ताखिया को गये, बहुतेरे यहूदियों तथा उन अन्य जातियों ने जो पहिले यहूदी मत में आ गये थे, उन पर विश्वास किया। परन्तु वे यहूदी जिन्होंने विश्वास नहीं किया, क्रोधित हो गये। उन्होंने पौलुस और बरनबास पर उपद्रव किया और उन्हें सिवानों से निकाल दिया। वे नये विश्वासी उन शिशुओं के समान थे जिनको उनके माता-पिता ने छोड़ दिया। वे सहज ही नाश हो सकते थे। परन्तु वे अपने नये विश्वास को छोड़कर पीछे मुड़ नहीं गये। उनका स्वर्गीय पिता उनकी रखवाली करता था। उसने अपना पवित्रात्मा उनके हृदयों में बसने के लिये भेजा था। इसका फल क्या हुआ? "और चेले आनन्द से और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते रहे।" (प्रेरितों १३:५२) कोई भी उस आनन्द को दूर नहीं कर सकता था। शैतान ने विरोध और उपद्रव का प्रयोग किया, परन्तु फिर भी वे आनन्दमग्न थे। प्रभु यीशु ने प्रतिज्ञा की थी कि उसका

आनन्द उसके शिष्यों में बना रहेगा। वह इन सारी विपत्तियों के होने पर भी सच था। कोई उनसे उस आनन्द को दूर नहीं कर सका। यद्यपि शहर के प्रमुख लोग उनके विरुद्ध थे तौभी अन्ताखिया में चेले आनन्दमग्न थे।

आप संसार के चारों ओर भ्रमण कर सकते हैं—एशिया, यूरोप अमरीका, आफ्रिका और आस्ट्रेलिया—कहीं भी जा सकते हैं—परन्तु आप ऐसा आनन्द कहीं नहीं पायेंगे। अपनी अभिलाषाओं को तृप्त करने के लिए आप जितना चाहें उतना पैसे उड़ा सकते हैं, परन्तु ऐसा आनन्द आप नहीं पायेंगे। वह आनन्द जो विपत्ति और उपद्रव के बीच भी रहता है, केवल प्रभु यीशु पर विश्वास करने के द्वारा ही मिल सकता है।

झूठा आनन्द तो भारत के कई तालाबों के समान है जो वर्षाकाल में तो भर जाते हैं परन्तु ग्रीष्म काल में एकदम सूख जाते हैं। वह पानी जो वर्षा के बाद रह जाता है दुर्गन्ध देने लगता है। उसमें मच्छड़ पैदा होते हैं। शीघ्र ही वह एक कीचड़ का गड्ढा बन जाता है। झूठा आनन्द और सांसारिक सुख ऐसे ही हैं। वे अस्थाई हैं। वे दलदल की तरह हैं और मनुष्य के हृदय को दूषित करते हैं।

परन्तु सच्चा आनन्द जो प्रभु देता है उस निर्झर के समान है जो साल भर बहता है; कोई भी ऋतु क्यों न हो—वर्षा हो या सूखा, गरमी हो या सर्दी। वह आनन्द जो प्रभु उस पुरुष अथवा स्त्री को देता है जिसका सम्पूर्ण विश्वास उस पर है, ऐसा ही है। उसका उद्गम विश्वासी के हृदय में होता है। यह आनन्द कठिन एवं दुखदायी अनुभवों में भी उमड़ता रहता है। वे विश्वासी जो अभी भी सताये जा रहे हैं, उनके पास यह आनन्द है। यह दिन प्रति दिन, सप्ताह प्रति सप्ताह, महिना प्रति महिना, साल व साल बहता रहता है, और देह की मृत्यु होने पर भी नहीं रुकता है।

एक प्रकार का फूल होता है जो 'रात की रानी' कहलाता है। इसकी पंखड़ियां सूर्यास्त के बाद खुलती हैं और यह केवल रात में सुगन्ध देता है। वह आनन्द जिसे प्रभु यीशु विश्वासियों को देता है, बहुधा दुख एवं विपत्ति की अंधेरी रात में अधिक पहिचाना जाता है।

दाख का फल, अंगूर, इससे पहिले कि हमें इसका मीठा रस मिले, अंगूर पेरने के कोल्हू में डाला जाता है। कोल्हू में जितना ही दबाव अंगूर पर पड़ता है उतना ही रस उनसे निकलता है। इसी रीति से उपद्रव और दुख विश्वासी के हृदय में स्वर्गीय आनन्द की मात्रा को बढ़ाने में सहायता पहुँचाते हैं। बाह्य दुख विश्वासी के हृदय में सच्चे आनन्द को दूर नहीं करते; उलटे, वे बहुधा उसे बढ़ाते हैं।

वर्णन से बाहर आनन्द

झूठा, पार्थिव आनन्द देखी वस्तुओं पर निर्भर होता है। अनेक लोग ऐसा आनन्द सिनेमा जाने, नाचने, प्रेम कहानियाँ पढ़ने आदि वस्तुओं से पाते हैं। परन्तु जब ये चीज़ें आँखों से ओझल हो जाती हैं, तब आनन्द भी चला जाता है। परन्तु सच्चा और स्वर्गीय आनन्द ऐसा नहीं है। पतरस ने मसीह के कुछ शिष्यों को लिखा, "उससे तुम बिन देखे प्रेम रखते हो, और अब तो उस पर बिन देखे भी विश्वास करके ऐसे आनन्दित और मगन होते हो, जो वर्णन से बाहर और महिमा से भरा हुआ है।" (पतरस १:८) यह महान् और "महिमापूर्ण आनन्द' उस व्यक्ति पर विश्वास करने से आता है जिसे हम देख नहीं सकते।

यह सच्चा आनन्द एक महान् और महिमा-युक्त आनन्द है जिस का वर्णन संसार के सभी भाषा के सब शब्दों को जोड़कर भी नहीं किया जा सकता है। परन्तु हम उसका अनुभव कर सकते हैं, यद्यपि वह वर्णनातीत है। वे जो हृदय से विश्वास रखते हैं कि मसीह उनके पापों के लिए मरा, उन्हें धर्मी ठहराने के लिये जी उठा, उनके हृदयों में यह आनन्द है। यदि आप इस 'महान् और महिमापूर्ण' आनन्द को जानना चाहते हैं तो आपको मसीह पर और केवल उसी पर अपना भरोसा

रखना होगा। जैसे ही आप विश्वास से मसीह को ग्रहण कोजियेगा, उसका आनन्द आपके हृदय में आयेगा।

सातगुणा आनन्द

परमेश्वर के वचन में सच्चा आनन्द सात रीतियों से वर्णित है।

"प्रभु का आनन्द" (नहेम्याह ८:१०)

"महान आनन्द" (लूका २:१०)

"अत्यन्त आनन्द" (भजन ४३:४)

"अत्यन्त महान आनन्द" (मत्ती २:१०)

"अनन्त आनन्द" (यशायाह २५:१०)

"सम्पूर्ण आनन्द" (यूहन्ना १५:११)

"वर्णन से बाहर और महिमा पूर्ण आनन्द" (१ पतरस १:८)

इस आनन्द का पूर्ण विवरण नहीं हो सकता। शब्द इसे प्रगट नहीं कर सकते। परन्तु प्रत्येक जो प्रभु पर अपना भरोसा रखते हैं इसको अनुभव कर सकते हैं। इसे आप करोड़ों रुपये अथवा डालर या पाउण्ड खर्च करके भी नहीं पा सकते हैं। परन्तु यदि आप अपने पापों से मन फिराएं और मसीह पर अपना भरोसा रखें, तो वह अपने रक्त से आपको सब पापों से शुद्ध करेगा और आपके हृदय को इस अद्भुत अनन्त आनन्द से भर देगा।

तृतीय अध्याय

सच्चा उपचार

एक स्त्री थी जो अनेक वर्षों से रक्त बहने के रोग से भयानक रीति से पीड़ित थी। यद्यपि उसने कई चिकित्सकों से उपचार कराया परन्तु उसकी दशा में सुधार न हुआ था। उसने अपना सब पैसा खर्च कर दिया था, परन्तु हालत सुधरने के बदले दिन-दिन और भी अधिक बिगड़ती गई थी। उसने यीशु के विषय में सुना था, अतएव वह भीड़ में यह विश्वास करके उसके पीछे आई, कि "यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूँगी, तो चंगी हो जाऊंगी। और तुरन्त उसका रक्त बहना बन्द हो गया और उसने अपनी देह में जान लिया कि वह अपनी बीमारी से चंगी हो गई। उसी क्षण यीशु भी यह जान कर कि सामर्थ उसमें से निकली है, भीड़ की ओर मुड़कर पूछने लगा 'मेरा वस्त्र किसने छूआ ?' उसके शिष्यों ने उसे उत्तर दिया : "तू देखता है कि भीड़ तुझ पर गिरी पड़ती है, और तू कहता है; कि किसने मुझे छूआ ?" तब यीशु ने उसे देखने के लिये जिसने यह काम किया था, चारों ओर दृष्टि की। तब वह स्त्री यह जानकर कि मेरी कैसी भलाई हुई है, डरती और काँपती हुई आई, और उसके पावों पर गिर कर, उससे सब हाल सच-सच कह दिया ! उसने उससे कहा, "पुत्री तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है; कुशल से जा, और अपनी इस बीमारी से बची रह।" (मरकुस ५:२५-३४)

स्त्री और रोग

कृपया इस स्त्री की कहानी को धीरे और ध्यान से पढ़िये। आप देखेंगे कि वह बारह वर्षों से खून बहने के रोग से ग्रसित थी। उसने

अपना स्वास्थ्य खो दिया था : उसका शरीर अत्यन्त दुर्बल हो गया था और उसका जीवन दुःखद बन गया था।

जैसा खून बहने का रोग इस स्त्री को था वह तो किसी भी स्त्री के लिए दुखदायी रोग होता। परन्तु एक और रोग है जो स्त्री के रोग से अधिक पीड़ाजनक, अधिक हानिकारक, तथा अधिक खतरनाक है। वह रोग है पाप। बाइबल हमें बताती है कि यह एक भयंकर रोग है। यशायाह भविष्यद्वक्ता ने लिखा :

"हाय ! यह जाति पाप से कैसी भरी है ! यह समाज अधर्म से कैसा लदा हुआ है। इस वंश के लोग कैसे कुकर्मी हैं, ये लड़के बाले कैसे बिगड़े हुए हैं ? उन्होंने यहोवा को छोड़ दिया; उन्होंने इस्राएल के पवित्र को तुच्छ जाना है ! वे पराये बनकर दूर हो गये हैं। तुम बलवा करके क्यों अधिक मार खाना चाहते हो ? तुम्हारा सिर घावों से भर गया, और तुम्हारा हृदय दुःख से भरा है।" (यशायाह १:४-५)

इस स्त्री का खून बहना बारह साल से जारी था। वह दुर्बल हो गई थी। यदि वह ठीक समय पर 'महान् वैद्य' प्रभु यीशु के पास नहीं आती तो वह उसी दशा में मर जाती। परन्तु, मेरे मित्र, इस संसार में हमसे प्रत्येक में उससे अधिक खतरनाक और भयंकर पाप का रोग है। आप में भी यह वैसे ही है जैसा दूसरों में। यह आपको उदास और बेचैन करता है। यदि आप 'महान् वैद्य' के पास आने में देर करेंगे तो निश्चय मरेंगे। वह मृत्यु शारीरिक मृत्यु न होगी : यह दूसरी मृत्यु है, नरक में अनन्त विनाश। बाइबल हमें बताती है : "अभी वह उद्धार का दिन है....." (२ कुरि० ६:२)

स्त्री और उसके अनेक चिकित्सक

उस स्त्री ने क्या किया था ? वह अनेक चिकित्सकों के पास गई थी, परन्तु अच्छा होने के बदले उसका रोग और भी बढ़ गया था (मरकुस ५:२६)। जब रक्त बहना आरम्भ हुआ, वह एक वैद्य के पास गई। उसने उसे कुछ दवा दी। वैद्य के आदेशानुसार उसने

औषध का सेवन किया, परन्तु वह अच्छी नहीं हुई। तब वह दूसरे चिकित्सक के पास गई। उसने उसे कुछ गोलियाँ दीं। यद्यपि वह कुछ समय तक उन गोलियों को खाती रही, परन्तु चंगाई का कोई निशान नहीं था। तब वह एक तीसरे हकीम के पास गई। उसने उसे दिलासा दी कि यदि वह उन दवाओं का सेवन करे जिसे वह देगा तो वह शीघ्र ही निश्चय चंगी हो जायेगी। परन्तु यद्यपि उसने हकीम की सभी दवाओं को खतम कर दिया, तौभी वह चंगी नहीं हुई। वह उदास और निराश हो गई थी। वह एक वैद्य से दूसरे के पास गई, परन्तु उसकी हालत और भी बिगड़ती गयी। आज भी चिकित्सक ग़लत उपचार करके रोगी की हालत को खराब कर देते हैं। कभी-कभी ग़लत उपचार के कारण मृत्यु भी हो जाती है।

उन सारे वैद्यों की तुलना, जिनके उपचार ने इस स्त्री के रोग को और भी बिगाड़ दिया था, अनेकों धर्म के गुरुओं से की जा सकती है। इनमें से कुछ, अपनी भ्रमात्मक शिक्षा द्वारा अनेकों की पापमय अवस्था को पहिले से भी अधिक खराब बना रहे हैं। ये धर्म-शिक्षक अपने रोगियों को जो पाप के रोग से रोगी हैं, कौन सी आत्मिक दवा लेने को कहते हैं? वे उनसे कई धार्मिक विधियों का पालन करने को कहते हैं। उनको किसी देवता की उपासना करने और उसकी मूर्ति के सामने प्रसाद चढ़ाने और पूजा करने को कहते हैं। वे उनसे बपतिस्मा लेने और किसी मसीही मण्डली के सदस्य होने को कह सकते हैं। परन्तु जो उनको करने को कहा गया, उन सबको करने के बाद लोग पाते हैं कि उनका पाप का रोग पहिले से अधिक बिगड़ गया है। इसी कारण प्रभु यीशु ने ऐसे धर्म गुरुओं को 'अंधों का अंधा मार्ग दर्शक' कहा (मत्ती १५:१५)। उसने उनमें से कुछ को कहा, "हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों तुम पर हाय! तुम एक जन को अपने मत में लाने के लिये सारे जल और थल में फिरते हो, और जब वह मत में आ जाता है,

तो उसे अपने से दूना नारकीय बना देते हो।" (मत्ती २३:१५) प्रभु आपको ऐसे लोगों के धोखे से बचाये।

'स्त्री ने अपना सब पैसा ख़र्च कर दिया'

उन अनेक वैद्यों ने जिन्होंने उस स्त्री का उपचार किया, उससे ऊंचा पारिश्रमिक लिया। साथ ही उसे उन विभिन्न औषधियों के लिए काफी दाम देना पड़ा। अन्त में वह अपना सब पैसा व्यय कर चुकी, परन्तु अच्छी नहीं हुई; वास्तव में दशा और भी बिगड़ गई थी। उसी रीति से, अनेक लोग पाप के रोग से दान-धर्म, और पुण्य कर्मों के द्वारा चंगा होने की कोशिश कर रहे हैं, परन्तु सब समय उनका जीवन और भी अधिक पापमय होता जाता है। बाइबल हमें बताती हैं कि हम अपने भले कामों के द्वारा पाप से उद्धार नहीं पा सकते हैं। "क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी परमेश्वर के सामने धर्मी नहीं ठहरेगा" (रोमियों ३:२०)। "तौभी यह जान कर कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं, पर केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहरता है·····" (गलतियों २:१६)। "हमारे सब धर्म के काम मैले चिथड़ों के समान हैं·····" (यशायाह ६४:६)।

मेरे मित्र, दान देने और भले कर्मों से आप अपने आपको रोग से बचा नहीं सकते हैं। यह स्त्री अपना सब पैसा अनेक वैद्यों से उपचार कराने में खर्च कर चुकी थी, परन्तु उसकी अवस्था और भी बिगड़ गई थी। परन्तु जब उसने विश्वास के द्वारा मसीह के वस्त्र को छुआ, तो मसीह ने उसे अद्भुत रीति से तुरन्त चंगा कर दिया। यदि आप अपना भरोसा प्रभु यीशु पर रखें और उसे अपना आत्मिक वैद्य बनायें, तो वह आपको भी पाप के रोग से चंगा करेगा।

मसीह, एक अद्वैत वैद्य

यह स्त्री अपने सभी चिकित्सकों से एकदम हतोत्साह हो गई थी। उनको पारिश्रमिक देने और उनकी दवाओं को खरीदने में वह अपना सब पैसा खर्च कर चुकी थी। परन्तु उसका जीवन और भी

अधिक दुःखद हो गया था। तब उसने प्रभु यीशु के विषय में सुना। उसने सुना कि वह विभिन्न रोगों के रोगियों को अद्भुत रीति से चंगा करता है। उसने सुना कि वह मुफ़्त में चंगा करता है। वह आशा करती थी और प्रार्थना करती थी कि वह उसके शहर में आये। एक दिन उसने सुसंदेश सुना कि वह शहर में आया है और एक बड़ी भीड़ शहर में चलते समय उसके पीछे हो ली है।

रुकावट

प्रभु यीशु के निकट वह स्त्री पहुँचना चाहती थी। परन्तु उसके चारों ओर लोगों की एक बड़ी भीड़ थी। इस कारण उसके लिये प्रभु तक पहुंचना कठिन हो गया। परन्तु वह भीड़ को ठेलते हुए आगे बढ़ने लगी। कितनों ने उसे रोकने की कोशिश की होगी। कई दूसरों ने मार्ग में अड़ंगा लगाया होगा। परन्तु वह आगे बढ़ती गई जब तक वह प्रभु यीशु के पास पहुंच न गई। और जैसे ही उसने उसके वस्त्र को छुआ, एक महान् सामर्थ यीशु से निकल कर उसके भीतर चली गई। वह समझ गई कि खून बहने का रोग उसी क्षण, पूर्णतया आश्चर्यजनक रीति से चंगा हो गया है, और उसे कुछ भी पैसा नहीं लगा था।

जैसे भीड़ ने स्त्री को शीघ्र प्रभु यीशु के पास आने में बाधा डालने की कोशिश की, वैसे ही शैतान और उसकी दुष्टात्माएं पापी को प्रभु यीशु के पास उद्धार के लिये आने में यथाशक्ति रोकने का प्रयत्न करती हैं। संबंधी और मित्रगण भी बहुधा बाधक होते हैं। धर्म-गुरु कहेंगे कि मसीह के पास आने की आवश्यकता नहीं है। भय बहुतों को पीछे रोक रखता है। परन्तु वह पुरुष या स्त्री जिसने यह जान लिया है कि शांति और उद्धार के लिये अब वह और कुछ नहीं कर सकता है; और जो उद्धार पाने के अपने सब प्रयासों के बाद भी और अधिक दुखी हो गया है, वह इस स्त्री के समान अन्त में प्रभु यीशु के पास आयेगा, उसे

विश्वास से स्पर्श करेगा और उद्धार पायेगा और अपने पाप के रोग से चंगा होगा।

'स्त्री ने विश्वास के द्वारा मसीह को स्पर्श किया'

इस स्त्री का यह विश्वास था वह यीशु के कपड़े को छूने मात्र ही से चंगी हो जायेगी। जैसे ही उसने ऐसा किया, वह अपने शरीर में यह जान गई कि वह चंगी हो गई। तब प्रभु यीशु ने स्पष्ट रीति से उसे बता दिया कि उसके विश्वास ने उसे चंगा किया।

दूसरे वैद्यों ने उसे बहुत कुछ करने को कहा, और उसे उनको पारिश्रमिक देना और उनकी दवाओं के लिए बहुत पैसे खर्च करना पड़ा था। परन्तु जब उसने केवल मसीह की पोशाक को छूआ, वह चंगी हो गई। उसने यह तुरन्त कर दिया, बड़ी अद्भुत रीति से, और उस स्त्री का कुछ भी खर्च नहीं हुआ।

हम अपने प्रतिदिन के जीवन में 'विश्वास के स्पर्श' को अनेक रीतियों से देख सकते हैं। कारखाने में, कारीगर बटन दबाता है और तुरन्त एक बड़ी मशीन ऊपर-नीचे चलने लगती है। रात में, गृहणी एक स्विच दबाती है और विद्युत दीप के द्वारा उसका घर प्रकाशमान हो जाता है। मोटर ड्राइवर, गाड़ी के स्वतः चालक बटन को दबाता है, और इंजिन चलने लगता है। इस रीति से अंगुली का स्पर्श मशीन अथवा बल्ब को 'शक्ति-भण्डार' से जोड़ देता है। उसी रीति से, जब उस स्त्री ने विश्वास से मसीह को स्पर्श किया उसके चंगाई की सामर्थ ने स्त्री के शरीर में प्रवेश किया। यदि आप विश्वास के द्वारा मसीह को स्पर्श करेंगे, और उसे अपना मुक्तिदाता और प्रभु ग्रहण करेंगे, तो वह आपको एक अद्भुत रीति से पाप की सामर्थ से बचाएगा। वह अभी ही यह कर सकता है; और ऐसा करने के लिये वह आप से पैसे नहीं चाहेगा। प्रभु यीशु मसीह वह आत्मिक वैद्य है जिसकी हमें आवश्यकता है। उसने

स्वयं कहा, "भले चंगों को वैद्य की आवश्यकता नहीं होती, पर बीमारों को"। वह धर्मी लोगों को बुलाने नहीं आया पर पापियों को। बाइबल हमें स्पष्ट रीति से बताती है कि सबने पाप किया है। (रोमियों ३:२३) इसी कारण चारों ओर सभी मनुष्यों को अपने पापों से चंगाई पाने के लिए सच्चे आत्मिक वैद्य अर्थात् मसीह के पास आना चाहिये। "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।" (इफि० २:८,९)

इन पदों में पापी की तुलना एक रोगी से और पाप की रोग से हुई है। प्रभु यीशु प्रत्येक को जो उसके पास आता है, सेंत मेंत पाप के रोग से चंगा करेगा। हम पाप से उद्धार को अपने प्रयास से नहीं पा सकते हैं। जैसे वह स्त्री अपने रोग से चंगी हुई जब उसने विश्वास के द्वारा मसीह के वस्त्र को छुआ; वैसे ही हम भी चंगे होते हैं, जब हम अपना भरोसा उस पर रखते हैं।

"परन्तु वह हमारे अपराधों के कारण घायल किया गया; वह हमारे अधर्मों के कारण कुचला गया; हमारी शांति की ताड़ना उस पर पड़ी; और उसके कोड़े खाने से हम चंगे होते हैं" (यशायाह ५३:५) दूसरे शब्दों में, प्रभु यीशु ने हमें पाप के आत्मिक रोग से चंगा करने, और बचाने के लिये अपना रक्त बहाया। यदि आप यह समझते हैं कि आप एक पापी हैं, और पापों को स्वीकार करते हैं, और प्रभु यीशु पर अपना विश्वास रखते हैं, तो वह अपने रक्त से आपको पापों से शुद्ध करेगा।

'मसीह से सामर्थ निकली'

जैसे ही उस स्त्री ने उसको स्पर्श किया, यीशु ने अनुभव किया कि सामर्थ उसमें से निकली है। उसने मुड़कर पूछा, 'मेरा वस्त्र किसने

छूआ ?' (मरकुस ५:३०)

हम इन दिनों में कई प्रकार की शक्तियों का व्यवहार करते हैं जिनसे लोग प्रभु यीशु के दिनों में अनभिज्ञ थे। उनमें से एक भाफ की शक्ति है। वाष्पचालित इंजिन की खोज पिछले कई सौ साल पहिले हुई है। अब हम उन्हें रेल मार्गों में देखते हैं। एक वाष्प चालित इंजिन माल से लदे कई डिब्बों अथवा कई यात्रियों से भरे डिब्बों को खींच सकता है।

हमारे पूर्वज विद्युत शक्ति के विषय में कुछ नहीं जानते थे। परन्तु अब गाँव का एक अनाड़ी भी उसके सम्बन्ध में कुछ जानता है। बड़े-बड़े बिजली घरों में यह शक्ति उत्पादित होती है। वहाँ से तार इसे कारखानों और घरों तक पहुंचाते हैं। एक स्विच के दबाने मात्र से ही बड़ी बड़ी मशीनें चलने लगती हैं और लोगों के घरों में बत्ती जल उठती है।

वाष्प एवं विद्युत दोनों ही में एक महान् सामर्थ है। परन्तु प्रभु यीशु में उससे भी महान् सामर्थ है। जिस क्षण उस स्त्री ने उसे छुआ, वह चंगी हो गई, और केवल वह एक नहीं थी; "और जितनों ने उसके वस्त्र के आँचल को छूआ, वे चंगे हो गये।" (मत्ती १४:३६) संसार के चारों ओर मनुष्यों ने इस महान् सामर्थ की, जो उनको पाप से छुड़ाने के लिए मसीह से निकलती है, अनुभव किया है।

देखिये कि परमेश्वर के वचनों में इस अद्‌भुत सामर्थ का कैसा वर्णन हुआ है। "क्योंकि क्रूस की कथा नाश होने वालों के निकट मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पाने वालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है।" (१ कुरि० १:१८) "उसके मृत्युंजय की सामर्थ" (फिलि० ३:१०)

"क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक

विश्वास करने वाले के लिए उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है। (रोमियों १:१६)

"और उसकी सामर्थ हमारी ओर जो विश्वास करते हैं, कितनी महान् है।" (इफि० १:१९)

मसीह का सुसमाचार हमें परमेश्वर की सामर्थ दिखाता है। हम स्वयं इसका अनुभव करते हैं जब हम सुसमाचार पर विश्वास करते हैं और विश्वास के स्पर्श से मसीह को मुक्तिदाता एवं प्रभु ग्रहण करते हैं। संसार के चारों ओर करोड़ों लोगों ने ऐसा अनुभव किया है। यही आपका भी अनुभव हो सकता है जब आप मसीह पर, जिसने क्रूस पर अपना रक्त आपके लिए बहाया और मृतकों में से पुनर्जीवित हुआ, उस पर अपना विश्वास रखेंगे।

स्त्री की गवाही

प्रभु यीशु ने यह प्रश्न, "मेरा वस्त्र किसने छुआ?" इसलिये नहीं पूछा क्योंकि वह नहीं जानता था। परन्तु वह चाहता था कि स्त्री दूसरों के समक्ष अंगीकार करे कि उसने क्या किया था। और उसने ऐसा किया। यद्यपि वह भय से काँप रही थी, तोभी वह आकर प्रभु यीशु के चरणों पर गिर पड़ी और सारी सच्चाई उसे कह सुनाई। (मरकुस ५:३३) इसी रीति से प्रभु यीशु हम से भी चाहता है कि हम भी जो कुछ उसने हमारे लिये किया है, दूसरों को बतायें। पाप से उद्धार पाने के बाद हमको मसीह का गवाह होना आवश्यक है।

दाऊद ने लिखा :

"हे परमेश्वर के सब डरवैयो, आकर सुनो, मैं बताऊँगा कि उसने मेरे लिये क्या क्या किया है।" (भजन संहिता ६६:१६)

एक अन्य व्यक्ति की गवाही को सुनिये, जिसका सम्पूर्ण जीवन प्रभु

यीशु के उद्धार के सामर्थ के द्वारा परिवर्तित हो गया था। यह व्यक्ति तरसुस का शाऊल था। वह अपनी धार्मिकता और धर्म का घमण्डी था। वह सुसमाचार का शत्रु था। देखिये कि उसने अपने संबंध में क्या लिखा, "मैं तो पहिले निन्दा करने वाला, और सताने वाला, और अंधेर करने वाला था; तौभी मुझ पर दया हुई, क्योंकि मैंने अविश्वास की दशा में बिन समझे बूझे, ये काम किए थे।" (१ तीमु० १:१३) शाऊल ने मसीह पर विश्वास किया, "और हमारे प्रभु का अनुग्रह उस विश्वास और प्रेम के साथ जो मसीह यीशु में है, बहुतायत से हुआ।" (१ तीमु० १:१४)

तरसुस का शाऊल पौलुस प्रेरित बन गया। सुसमाचार का एक प्रचारक और 'नये नियम' की कई पुस्तकों का लेखक बन गया। उसकी गवाही के सारांश को सुनिये; "यह बात सच और हर प्रकार से मानने के योग्य है कि मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिए जगत में आया, जिन में सब से बड़ा मैं हूँ।" (१ तीमु० १:१५) संसार के चारों ओर करोड़ों लोग ऐसी गवाही दे सकते हैं। प्रभु यीशु ने उनको बचाया है जैसे उसने शाऊल को पाप और शैतान की सामर्थ से बचाया।

कुछ वर्ष पूर्व पश्चिम बंगाल प्रांत के खडगपुर शहर में प्रभु यीशु के विश्वासियों का एक झुण्ड सड़क पर प्रचार कर रहा था। एक युवक उनको बाधा देने के प्रयास में चिल्ला उठा; "हमारे गुरु भी हमको बचा सकते हैं।" एक अनुभवी मसीही ने उससे कहा, "जवान मित्र, कृपया आगे आइये और सभों को बताइये कि कैसे आपके गुरु ने आपको आपके पापों से बचाया है।" भीड़ शांत होकर ठहरी रही। परन्तु वह युवक एक शब्द भी नहीं बोल सका। थोड़ी देर बाद उसके अपने लोगों ने जो उसी धर्म के मानने वाले थे, उसे भीड़ से ढकेल कर बाहर कर दिया। उसके पास कोई गवाही नहीं थी। एक रोगी दूसरे रोगी को चंगा नहीं कर सकता है। एक गुरु जो स्वयं एक पापी है दूसरे को पाप के जंजीर

से मुक्त नहीं कर सकता। मेरे मित्र, अपने धर्म का घमण्ड मत कीजिये। अपने आपको नम्र कीजिये और प्रभु यीशु के पास आइये। अपने पापों को उसके समक्ष अंगीकार कीजिये। अपने पाप से मुड़िये और यीशु मसीह को अपना मुक्तिदाता ग्रहण कीजिये। जैसे ही आप विश्वास के द्वारा मसीह को स्पर्श कीजियेगा, उसकी सामर्थ आप को बचायेगी। फिर आपके पास भी संसार को देने के लिये एक गवाही होगी।

'स्त्री का तीन गुणा अनुभव'

उस स्त्री के लिए प्रभु यीशु के शब्दों पर ध्यान दीजिये। (१) उसने उससे कहा 'पुत्री', (२) उसने उससे बताया कि उसके विश्वास ने उसे चंगा किया था। (३) उसने उसे शांति से चले जाने को कहा।

(१) वह स्त्री परमेश्वर की सन्तान बनाई गई थी। अनेक प्रचारक और धर्म-गुरु हमें बताते हैं कि सभी मनुष्य एक समान परमेश्वर के सन्तान हैं। बाइबल ऐसा नहीं सिखाती है। प्रभु यीशु ने स्वयं कुछ धर्म गुरुओं से कहा : "तुम अपने पिता शैतान से हो, और अपने पिता की लालसाओं को पूरी करना चाहते हो।" (यूहन्ना ८:४४) उसने उन्हीं लोगों को अन्य अवसर पर कहा, "हे सांपो, हे करैतों के बच्चो, तुम नरक के दण्ड से क्योंकर बचोगे।" (मत्ती २३:३३) जो शैतान के झूठ का अनुसरण करते हैं, वे शैतान के सन्तान हैं, परमेश्वर के नहीं। परन्तु जितने परमेश्वर के पुत्र प्रभु यीशु को मुक्तिदाता ग्रहण करते हैं और उस पर विश्वास करते हैं उनको परमेश्वर अपनी सन्तान बनने का अधिकार देता है (यूहन्ना १:१२)।

(२) प्रभु यीशु ने उस स्त्री से कहा कि उसके विश्वास ने उसे बचाया है। यदि हम उद्धार पाना चाहते हैं तो हमें भी प्रभु यीशु पर अपना विश्वास रखना होगा। "प्रभु यीशु पर विश्वास रख तो तू और

तेरा घराना उद्धार पायेगा।" (प्रेरित १६;३१)

(३) प्रभु यीशु ने स्त्री से कहा, "कुशल (शांति) से चली जा"। इस शताब्दी के आरम्भ में अनेकों राजनेताओं ने संसार में शांति लाने का प्रयत्न किया। वे असफल रहे, प्रथम विश्व महायुद्ध छिड़ा और संसार में चारों ओर गड़बड़ी और अशान्ति फैली। तब उन्होंने शांति लाने के हेतु, राष्ट्र संघ' (लीग आफ नेशनस) का निर्माण किया। यह भी असफल हुआ : और दूसरा विश्व महायुद्ध पहिले से भी अधिक भयंकर हुआ। तब 'संयुक्त राष्ट्र संघ' (यू० एन० ओ०) का निर्माण हुआ। परन्तु यह भी संसार में शाँति लाने में असफल रहा। संसार के चारों ओर सब प्रकार की गड़बड़ी है। शांति बाहर से लाई नहीं जा सकती है। अशांति की जड़ मनुष्य के हृदय का पाप है। केवल शाँति का राजकुमार, प्रभु यीशु मनुष्यों के हृदयों में शांति ला सकता है। क्रूस पर मरने के एक रात पहिले उसने अपने शिष्यों से कहा, "मैं तुम्हें शांति दिये जाता हूं; मैं अपनी शांति तुम्हें देता हूं। तुम्हारा मन न घबराये और न भयभीत हो।" (यूहन्ना १४:२७) अब वह आप से भी कहता है, "हे सब थके और बोझ से दबे लोगो, मेरे पास आओ, और मैं तुम्हें विश्राम दुंगा।" (मत्ती ११:२८)

मेरे मित्र, आप भी पाप के रोग से ग्रसित हैं। आपने अनेकों धर्म गुरुओं की शिक्षा सुनी होगी। आपने अनेकों धर्म विधियों को पूरा किया होगा और बहुत प्रार्थना की होगी। परन्तु अब भी आपका जीवन पाप और बुरी आदतों से बंधा हुआ है। आप उदास और बेचैन हैं। आज ही मसीह के पास आइये। वह शांति का राजकुमार है। उसके पास आकर अपने पापों को मान लीजिये और उसे अपना मुक्तिदाता ग्रहण कीजिये। वह आपको परमेश्वर की सन्तान बनाएगा, आपको पापों से बचायेगा और आपको अपनी अद्भुत शांति देगा।

चतुर्थ अध्याय

'सच्ची ज्योति'

सन् १९६७ ई० के जाड़े में एक भयंकर भूकम्प ने पश्चिम भारत में, महाराष्ट्र प्रान्त के 'कोयना नगर' को ध्वंस कर दिया। अनेकों घरों को क्षति पहुंची तथा अनेक लोग बुरी तरह से घायल हो गये। कुछ का देहान्त हो गया। कोयना नगर स्थित बड़ा बिजली-घर भी जो बम्बई शहर को विद्युत पहुंचाता है वह भी क्षतिग्रस्त हुआ। इंजिनों को बन्द कर देना पड़ा। अचानक बम्बई शहर की सारी बत्तियां बुझ गईं। राहियों को पथ दिखाने के लिए सड़कों पर बत्तियाँ नहीं थीं। रात पाली के मजदूर कुछ भी नहीं कर सके। सब प्रकार के कारखानों में काम बन्द करना पड़ा। विद्युत शक्ति के अभाव के कारण अनेकों बम्बई निवासियों को तकलीफ और हानि सहनी पड़ी :

हृदय का अन्धकार

शहर में अंधेरा छा जाना बुरा है, परन्तु स्त्री पुरुषों के हृदय का अंधेरा उससे भी बुरा है। रोम के मसीहियों को पत्र लिखते हुए पौलुस हमें उन मनुष्यों का हाल बताता है जो परमेश्वर को महिमा और धन्यवाद नहीं देते हैं; "उनका निर्बुद्धि मन अंधेरा हो गया" (रोमियों १:२१) इसी अध्याय के बाद के पदों में वह उन लोगों की भयंकर अवस्था का विवरण देता है जिनका हृदय और बुद्धि अंधकारमय है, 'सो वे सब प्रकार के अधर्म, और दुष्टता, और लोभ, और बैर भाव से भर गये; और डाह, और हत्या, और झगड़े, और छल, और ईर्ष्या से भरपूर हो गए। और चुगलखोर, बदनाम करने वाले, परमेश्वर के देखने में

घृणित, औरों का अनादर करने वाले, अभिमानी, डींगमार, बुरी-बुरी बातों के बनाने वाले, माता-पिता की आज्ञा न मानने वाले, निर्बुद्धि, विश्वासघाती, मयारहित, और निर्दय हो गये।' (रोमियों १:२९-३१)

यह चारों ओर स्त्री पुरुषों के अंधकार का चित्र है। कोयना नगर के बिजली घर के बन्द हो जाने से हुई तकलीफ की अपेक्षा यह असंख्य लोगों को अत्यधिक दुख पहुँचाती है। वाह्य अन्धकार एक बुरी चीज़ है। अनेक चोर और डाकू रात में काम करते हैं। कितने ही लोग रात में मौत के घाट उतारे गये। कितने ही रात में व्यभिचार तथा अन्य कामवासनापूर्ण कार्य करते हैं। अनेक लोग सांपों से डसे गये, क्योंकि रात के अंधेरे में वे उन जहरीले सांपों को देख न सके। कई मार्ग से भटककर गड्ढ़ों और कुओं में गिर पड़े। यदि वाह्य अंधकार इतना कष्ट और हानि पहुँचा सकता है तो मनुष्यों के हृदयों में पाप का अंधकार कितना और अधिक दुखदायी और हानिकारक होगा।

अन्धकार का मार्ग

पाप, मनुष्यों के हृदयों और बुद्धियों में अंधकार का कारण होता है। पौलुस ने इफिसुस में स्थित मसीह के विश्वासियों को ऐसे लिखा: "जैसे अन्य जातीय लोग अपने मन की अनर्थ रीति पर चलते हैं, तुम अब से फिर ऐसे न चलो। क्योंकि उनकी बुद्धि अंधेरी हो गई है।" (इफि० ४:१७,१८) दुष्ट लोग...सीधाई के मार्ग को छोड़ देते हैं, ताकि अन्धेरे मार्ग में चलें," (नीतिवचन २:१३) शैतान स्वयं "अन्धकार का हाकिम" है और जो मनुष्य शैतान के मार्गों पर चलता है वह अन्धकार में चलता है। ऐसा मनुष्य यह नहीं जानता है कि वह किधर जा रहा है। (यूहन्ना १२:३५) वह परमेश्वर और शैतान, सच और झूठ, सही और ग़लत अथवा भले और बुरे में अन्तर नहीं बता सकता है। ऐसा व्यक्ति सांसारिक शिक्षा में ज्ञानवान हो सकता है। वह एक दार्शनिक अथवा वैज्ञानिक हो सकता है। वह एक निपुण वक्ता अथवा लेखक

हो सकता है। परन्तु यदि पाप का अंधकार अब तक उसकी बुद्धि में है तो वह परमेश्वर और स्वर्ग के विषय में कुछ नहीं जानता है। वह पाप के कारण उद्धार के अर्थ को नहीं समझ सकता है। अनन्त जीवन क्या है, वह नहीं जानता है। स्वर्ग का विचार मात्र भी उसके पास नहीं है। परमेश्वर के राज्य के विषय में सरलतम् सच्चाई को भी वह नहीं पकड़ सकता है। क्या आप ऐसे हैं? यदि हैं, तो आप प्रभु यीशु से विनती कीजिये कि वह आपको अपना अद्भुत प्रकाश दिखाकर आपकी बुद्धि से अन्धकार को दूर करे। वह आप के लिए यह करेगा, जैसा उसने मृत्यु से पुनर्जीवित होकर उसी संध्या को अपने दो शिष्यों के लिए किया। (लूका २४:४५) वह अपना प्रकाश आपके हृदय में चमकायेगा।

कठोर हृदय और अन्धकार

मैं भारत के अनेक भागों का रेल द्वारा भ्रमण कर चुका हूं। चक्रधरपुर और राउरकेला के मध्य रेल पथ एक लम्बी, अंधकारपूर्ण सुरंग से होकर गई है। प्रतिदिन रेलगाड़ियां इससे होकर जाती हैं। एक दिन जब सूर्य चम-चम चमक रहा था, मैं उसी रेल पथ पर यात्रा कर रहा था। अकस्मात् डिब्बे के भीतर रात के समान अंधेरा हो गया। गाड़ी सुरंग में प्रवेश कर चुकी थी। बाहर सूर्य चमक रहा था परन्तु सुरंग चट्टान के अन्दर बनी थी। सूर्य की चमकीली किरणें सुरंग के अन्दर प्रवेश करने में असमर्थ थीं।

पाप मनुष्य के हृदय को कठोर बना देता है, जिससे परमेश्वर के सत्य का प्रकाश भीतर चमक नहीं सकता है। हमें सावधान होना चाहिये कि हमारा हृदय पाप के छल में हठी और कठोर न बन जाये (इब्रा० ३:१३)।

फरीसियों अर्थात् मसीह के साथ के यहूदी धर्म गुरुओं के साथ यही हुआ। (मरकुस ३:५) पाप के द्वारा उनका हृदय ऐसा कठोर हो

गया कि उनकी बुद्धि अंधेरी हो गई और वे मसीह पर विश्वास के द्वारा उद्धार के सरल सन्देश को समझ न सके। "जगत की ज्योति" अर्थात् प्रभु यीशु उस मनुष्य के हृदय में नहीं चमक सकता जो अपने हृदय को अपने पाप से ज्योति के विरुद्ध कठोर किए रखता है।

प्रकाश उस अंधकारपूर्ण सुरंग में जिसमें होकर रेलगाड़ी को जाना था, प्रवेश न कर सका। परन्तु लोग यदि प्रध्वंसक बारूद (डाइनेमाइट) से सुरंग के ऊपर के चट्टान को उखाड़ दें तो प्रकाश प्रवेश कर सकेगा। उसी रीति से यदि आप पश्चात्ताप करें और अपने पाप से मुड़ें, तो आप विश्वास के द्वारा स्वयं 'जगत की ज्योति' को ग्रहण कर सकते हैं। जब प्रभु यीशु आपके हृदय में आयेगा, वह अंधकार को दूर करेगा, और आपके हृदय को अपने अद्भुत प्रकाश से भर देगा।

रात्रि में हमारे घर स्वभावतः अंधेरे हो जाते हैं। परन्तु यदि हमारा संबंध विद्युत संचार से है तो हम उनमें प्रकाश ला सकते हैं। शायद हम यह न जानें कि बिजली घर में विद्युत शक्ति कैसे उत्पन्न होती है। सम्भवतः हम इस बात के जानकर न हों कि विद्युत शक्ति कैसे तारों के माध्यम से हमारे घर तक आती है। परन्तु हम यह जानते हैं कि यदि हम स्विच को उचित दिशा में दबायें तो हमारे घरों में ज्योति आती है और अंधकार दूर हो जाता है।

प्रभु यीशु ने स्वयं कहा, "जगत की ज्योति मैं हूं; जो मेरे पीछे हो लेगा वह अंधकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पायेगा।" (यूहन्ना ८:१२) करोड़ों लोग विद्युत शक्ति के उत्पादन विधि से अनभिज्ञ हैं। परन्तु वे इसका व्यवहार करते हैं। वे यह जानते हैं कि जब वे अपने घर में स्विच दबाते हैं तब उनको रोशनी मिलती है। उसी रीति से, जब आप विश्वास के द्वारा मसीह को ग्रहण करेंगे, आप अपने हृदय में उसका प्रकाश पायेंगे। पाप का अंधकार दूर हो जाएगा। आप भी अपने अनुभव में इसे सिद्ध कर सकते हैं जिसे करोड़ों लोग सिद्ध कर

चुके हैं। मसीह यथार्थ में 'जगत की ज्योति' है। हो सकता है आप मसीह के विषय में अधिक नहीं समझते हों, परन्तु यदि विश्वास के द्वारा आप उसे स्पर्श करेंगे तो वह आपको प्रकाश देगा। आप उतनी ही आसानी से उसे अपने हृदय में मुक्तिदाता ग्रहण कर सकते हैं जितनी आसानी से आप अपने घर में स्विच दबाते हैं और अंधेरे कमरे में प्रकाश पाते हैं। जब प्रभु यीशु आपके हृदय में आयेगा, वह आपको दीप्तिमान करेगा और सब अंधकार को दूर करेगा। "ज्योति पर विश्वास करो कि तुम ज्योति के सन्तान होओ।" (यूहन्ना १२:३६)

पश्चिम बंगाल के खड़गपुर शहर में, जिस घर में हम रहते थे उसके दरवाजे और खिड़किया लकड़ी की बनी थी। प्रतिदिन धूप जोरों से चमकती थी। दोपहर को जब हम विश्राम करना चाहते थे, हम सभी दरवाजों और खिड़कियों को बन्द कर दिया करते थे। घर में तुरन्त अंधकार छा जाता था। परन्तु जैसे ही हम उनको फिर खोलते थे, सूर्य की किरणें हमारे घर के भीतर आतीं और उसे आलोकित करती थीं। जब तक आप मसीह के लिए अपना हृदय नहीं खोलेंगे, वह पाप के अंधकार में रहेगा। परन्तु जैसे ही आप प्रभु यीशु को ग्रहण करने के लिए अपने हृदय को खोलेंगे, उसका प्रकाश आपके हृदय को प्रज्वलित करेगा। "परमेश्वर जिसने कहा, कि अन्धकार में ज्योति चमके; वही हमारे हृदयों में चमका, कि परमेश्वर की महिमा की पहिचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो।" (२ कुरि० ४:६) प्रभु यीशु ने पौलुस को अन्य जाति के लोगों के मध्य में प्रचार करने को भेजा, "कि उनकी आँखें खोले, कि वे अंधकार से ज्योति की ओर, और शैतान के अधिकार से परमेश्वर की ओर फिरें।" (प्रेरितों २६:१८) वह आज ही आपको अंधकार की शक्ति से छुड़ाना चाहता है। अभी उसकी ओर मुड़िये।

धार्मिकता का सूर्य

भारत में अनेक लोग यह सोचते हैं कि मसीहियत यूरोप का एक धर्म है। परन्तु यह सत्य नहीं है। प्रभु यीशु जगत का उद्धारकर्त्ता है। वह सभी देशों, राष्ट्रों और धर्मों के स्त्री-पुरुषों को बचा रहा है। बाइबल यह स्पष्ट करती है कि जो उद्धार प्रभु यीशु देता है वह चहुं ओर के सभी लोगों के लिए है। इस पद को देखिये :

जब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने प्रभु यीशु को अपनी ओर आते देखा, तो उसने कहा : "देखो यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो **जगत** का पाप उठा ले जाता है।" (यूहन्ना १:२६) उसके कहने का तात्पर्य यह था कि प्रभु यीशु सारे जगत के पाप के लिए क्रूस पर अपने आपको बलिदान स्वरूप देगा। "परमेश्वर ने **जगत** से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास रखे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाये।" (यूहन्ना ३:१६) सामरिया के लोगों ने कहा, "यही सचमुच में **जगत** का उद्धारकर्त्ता है।" (यूहन्ना ४:४२) प्रभु यीशु ने स्वयं कहा, "**जगत** की ज्योति मैं हूं, जो मेरे पीछे हो लेगा वह अंधकार में न चलेगा परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।" (यूहन्ना ८:१२) उसने यह भी कहा : "मैं **जगत** को दोषी ठहराने के लिए नहीं, परन्तु जगत का उद्धार करने के लिए आया हूं।" (यूहन्ना १२:४७) उसने अपने शिष्यों से कहा कि वह जीवन की रोटी है, जो स्वर्ग से उतर कर **जगत** को जीवन देने के लिए आई है। (यूहन्ना ६:३३)

मृत्यु से पुनर्जीवित होने के बाद प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों को आज्ञा दी कि वे **सारे जगत** में जायें और उनको शिष्य बनायें। मत्ती २८:१६) इससे यशायाह की एक अद्‌भुत भविष्यवाणी पूरी हुई, 'मैंने

तुझे अन्य जातियों के लिए ज्योति ठहराया है, ताकि तू पृथ्वी के छोर तक उद्धार का द्वार हो।" (प्रेरितों १३ : ४७) "···अन्य जातियों में उसका प्रचार हुआ, जगत में उस पर विश्वास किया गया···" (१ तीमुथियुस ३:१६)

मसीह की प्रशंसा में चौबीस प्राचीन यह गीत गाते हैं, "तू ने वध होकर अपने लोहू से हर एक कुल और भाषा, और लोग, और जाति में से परमेश्वर के लिए लोगों को मोल लिया है।" (प्रकाशितवाक्य ५ : ६)

बाइबल में कई और पद हैं जो स्पष्ट रीति से बताते हैं कि मसीह के द्वारा उद्धार का सुसमाचार सारे जगत के लिए है। बाइबल के कुछ भाग अब संसार की १३०० भाषाओं में उपलब्ध हैं। इन भाषाओं को बोलने वाले लोग मसीह को अपना मुक्तिदाता ग्रहण करते हैं।

मलाकी भविष्यद्वक्ता ने मसीह के जन्म के ४०० वर्ष पूर्व पुस्तक लिखी। उसने भविष्यवाणी की कि 'धार्मिकता का सूर्य' अपने पंखों में चंगाई लिए हुए उदय होगा। (मलाकी ४:२) 'जगत की ज्योति' अर्थात् प्रभु यीशु वह आत्मिक 'धार्मिकता का सूर्य' था। वह सम्पूर्ण जगत को ज्योति पहुंचाता है।

भारत में लोग बहुधा कहते हैं कि मसीहियत पश्चिम देशों का एक धर्म है। इससे मालूम होता है कि वे बहुत थोड़ा इतिहास जानते हैं। प्रभु यीशु का जन्म यूरोप में नहीं हुआ था, परन्तु यहूदिया के बैतलहम में जो एशिया में है। प्रेरित जो प्रभु यीशु के प्रथम शिष्य थे वे एशियाई थे, और पौलुस भी, जो यूरोप में सुसमाचार प्रचार करने वाला प्रथम मनुष्य था वह एक एशियाई था।

प्रथम मसीही कलीसिया की स्थापना यरूशलेम में हुई, इंगलैंड में नहीं। प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों से कहा कि पवित्र आत्मा उन पर

आयेगा और वे सामर्थ पायेंगे और **यरूशलेम, सारे यहूदिया, सामरिया,** और **संसार के छोर तक** उसके गवाह होंगे (प्रेरितों १:८)। अतएव सुसमाचार सर्व प्रथम एक एशियाई शहर (यरूशलेम) में एक एशियाई प्रचारक (पतरस) के द्वारा हुआ, और यूरोप में प्रचार होने से पहिले एशिया के कई शहरों में पहुँचाया गया।

भारत में सुसमाचार प्रचार करने वाला प्रथम व्यक्ति प्रेरित थोमा था और वह यूरोप निवासी नहीं था। यूरोप निवासियों के भारत आने के पहिले ही भारत में मसीही लोग थे। बाइबल बड़ी स्पष्ट रीति से बताती है कि मसीह के द्वारा मुक्ति का संदेश सारे संसार के लिये है।

एक ही सूर्य सारे संसार को प्रकाश देता है। यह संसार के सभी देशों पर चमकता है। यह अपना प्रकाश संसार के देशों, शहरों, नगरों और गांवों को देता है। यह अपना प्रकाश सभी जाति के लोगों को देता है, चाहे उनके चमड़े का रंग कुछ भी क्यों न हो परमेश्वर ने दो, या दस अथवा एक सौ सूर्य नहीं बनाए, परन्तु सिर्फ एक। हमें दूसरे की आवश्यकता नहीं है।

प्रभु यीशु 'धार्मिकता का सूर्य' और 'जगत की ज्योति है'। वह ही एक मात्र आत्मिक सूर्य है जिसे जगत को आलोकित करने के लिये परमेश्वर ने ठहराया है। हमें दूसरे की आवश्यकता नहीं है। अब तक १३०० भाषाओं के बोलने वालों ने प्रभु यीशु को मुक्तिदाता और प्रभु ग्रहण किया है। अफ्रीका, अमेरीका, एशिया, आस्ट्रेलिया और यूरोप से लोग परमेश्वर के द्वारा अंधकार से उसकी अद्भुत ज्योति में बुलाए गये हैं। (१ पतरस २:९) वे अंधकार में रहते थे, परन्तु जब से वे प्रभु के लोग बने तब से वे ज्योति में रहते हैं (इफि० ५:८)

प्रभु यीशु ने यह नहीं कहा, "मैं इंगलैंड की ज्योति हूं" अथवा "मैं यूरोप की ज्योति हूं," परन्तु उसने कहा, "**जगत की ज्योति मैं हूँ।**" धार्मिकता का प्रकाश सूर्य के समान सारे जगत में चमकता है। सब देशों

के लोग अपने अंधकार पूर्ण हृदय और बुद्धि में उसका प्रकाश ग्रहण कर रहे हैं। "पृथ्वी पर तो अंधियारा और राज्य-राज्य के लोगों पर घोर अंधकार छाया हुआ है : पर तेरे ऊपर यहोवा उदय होगा, उसका तेज तुझ पर प्रगट होगा।" (यशायाह ६०:२)

इस अन्धकार में अनेक चीज़ों का भाग है। दुष्टता, कामवासना, बुराई, और छल अन्धकार के काम हैं। मद्यपान, जुआ, गंदे सिनेमा, नाच, गंदे उपन्यास मनुष्यों की बुद्धि को अंधेरी बनाने में सहायक होते हैं। दंगा, लोभ घमण्ड, चोरी, मूर्ति पूजा, अन्ध विश्वास, और झूठे धर्मों ने भारत तथा संसार के अन्य देशों के लोगों की बुद्धियों को अन्धकार-पूर्ण बना दिया है। प्रतिदिन सभी वर्गों के लोगों में अराजकता बढ़ती जाती है। सभी जगह के लोगों पर परमेश्वर का क्रोध लाता है।

इन बातों के प्रकाश में हमें क्या करना चाहिये? मैं आप से निवेदन करता हूं, मेरे मित्रो, ज्योति की ओर मुड़िये। प्रभु यीशु पर अपना भरोसा रखिये।

जब अपने घर में बिजली का स्विच दबाते हैं तब क्या होता है? जैसे ही आप स्विच दबाते हैं बिजली की बत्ती चमकने लगती है। उसी रीति से जैसे ही आप मसीह पर विश्वास रखेंगे, उसका प्रकाश आपके हृदय में आएगा : अन्धकार लुप्त हो जाएगा। आप उसके जीवन और उद्धार को जानेंगे और उसके हो जाएंगे। अन्धकार में मत रहिये। परमेश्वर आपको अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुला रहा है (१ पतरस २:९) आइये और उसके प्रकाश में रहिये।

पंचम अध्याय

सच्चा मार्ग

हावड़ा रेलवे स्टेशन में कई प्लेटफार्म हैं। एक प्लेटफार्म से गाड़ियाँ बम्बई जाती हैं। दूसरे प्लेटफार्म से मद्रास जाने वाली गाड़ियाँ जाती हैं। एक ओर से दिल्ली की गाड़ियाँ जाती हैं। उस व्यक्ति को जो कलकत्ता से मद्रास जाना चाहता है, मद्रास का टिकट लेना होगा और तब मद्रास जाने वाली गाड़ी में जाकर बैठना होगा। यदि वह बम्बई जाने वाली गाड़ी पर सवार होता है तो वह मद्रास नहीं पहुँचेगा! टिकट परीक्षक उसके टिकट को देखेगा, और उस पर जुरमाना लगाएगा, और उसे गाड़ी से उतार देगा।

बम्बई से अनेकों मार्ग भारत के विभिन्न भागों में जाते हैं। इनमें से प्रत्येक मार्ग कलकत्ता नहीं जाता है। यदि कोई व्यक्ति यात्रा कर रहा हो और उसे सही मार्ग का ज्ञान न हो तो वह अपने आपको गन्तव्य स्थान में पाने के बदले किसी जंगल में पाएगा।

बम्बई शहर के शान्ताक्रूज इलाके में एक हवाई-अड्डा है। प्रतिदिन अनेकों हवाई जहाज वहाँ उतरते हैं। परन्तु सभी हवाई जहाज बम्बई में नहीं उतरेंगे। वह व्यक्ति जो बम्बई जाना चाहता है, उसे यह निश्चित करना होगा कि वह उस हवाई जहाज पर सवार है जो बम्बई उतरने वाला है।

मद्रास एक प्रमुख बन्दरगाह है। कई जलपोत वहाँ आते हैं। परन्तु

सभी जलयान वहाँ नहीं आते हैं। वे संसार के विभिन्न देशों को जाते हैं और विभिन्न बन्दरगाहों पर ठहरते हैं। वह यात्री जो मद्रास में उतरना चाहता है, जहाज में चढ़ने के पहिले उसे यह पता लगा लेना होगा कि वह जहाज मद्रास जा रहा है।

क्या सभी मार्ग एक ही परमेश्वर तक पहुँचते हैं ?

मैं भारत के विभिन्न स्थानों का भ्रमण कर चुका हूँ। परमेश्वर के विषय में मैं अनेक विभिन्न प्रकार के लोगों से बोल चुका हूं। उनमें से बहुतों ने मुझ से कहा कि ये अलग-अलग धर्म कई मार्गों के समान हैं जो अन्त में एक ही परमेश्वर तक पहुँचते हैं परन्तु बाइबल इसके सम्बन्ध में क्या कहती है :

"हम तो सबके सब भेड़ों की तरह भटक गये थे; हम में से हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया" (यशायाह ५३:६)

इसका क्या अर्थ है ? हम एक मनुष्य के विषय में सोचें जो सड़क पर चल रहा है। वह एक दूर शहर में स्थित अपने घर को जा रहा है। वह मार्ग में एक संकेत स्तम्भ देखता है। वह यह जान लेता है कि वह एक ग़लत मार्ग में है। वह भटक गया है। उसे क्या करना चाहिए ? क्या उसे उसी दिशा में चलते रहना चाहिए ? यदि वह ऐसा करे तो क्या वह घर पहुंचेगा ? कदापि नहीं। उसे मुड़कर उस स्थान तक वापस जाना होगा जहाँ से वह ग़लत मार्ग में चलने लगा था और तब सही मार्ग में जाना होगा।

परमेश्वर का वचन हमें बताता है कि हम सब भेड़ों की नाईं भटक गए हैं। यदि हम अपने मार्ग में चलते रहें, तो हम कदापि परमेश्वर के पास नहीं पहुँच सकते हैं। यह धारणा कि सभी धर्म परमेश्वर के पास पहुँचते हैं, एक भ्रान्तिमूलक धारणा है। संसार को छलने वाले शैतान (प्रकाशितवाक्य १२:१०) ने स्वयं यह विचार मनुष्यों की बुद्धियों में बो दिया है। परमेश्वर का वचन दिखाता है कि यह विचार ग़लत है।

यह हमें बताता है कि सब मनुष्य भटक गये हैं। इसका अर्थ है कि सभी मनुष्यों को अपना ग़लत मार्ग त्यागना होगा और सही मार्ग में आना होगा। सच्चे और जीवते परमेश्वर के पास आने का यही एक मात्र मार्ग है।

ग़लत रास्ते

बाइबल हमें अनेक ग़लत रास्तों के बारे में बताती है। करोड़ों लोग आज उन मार्गों पर चल रहे हैं। वे यह नहीं समझते हैं कि वे मार्ग विनाश को पहुंचाते हैं। निम्नलिखित उनमें से कुछ हैं :

"दुष्टों का मार्ग" (भजन संहिता १:६)
"टेढ़े मार्ग" (भजन संहिता १२५:५)
"चौड़ा मार्ग" (मत्ती ७:१३)
"अंधेरे मार्ग" (नीतिवचन २:१३)
"लुचपन का मार्ग" (२ पतरस २:२)
"बिलाम का मार्ग" (२ पतरस २:१५)
"कैन का मार्ग" (यहूदा ११)

सभी देशों, धर्मों और समाजों के करोड़ों लोग इनमें से एक या कई ग़लत मार्गों पर चल रहे हैं। कैसे कोई व्यक्ति जो इन ग़लत मार्गों पर चल रहा है, सच्चे परमेश्वर के निकट पहुँच सकता है? संसार का कोई भी धर्म संस्कार अथवा रीति-विधि मनुष्य को कदापि सच्चे और जीवते परमेश्वर के पास नहीं पहुंचा सकते हैं।

मेरे मित्र, मैं चाहता हूं कि आप यह स्पष्ट रीति से समझ लें। सभी रास्ते एक ही परमेश्वर के पास नहीं पहुंचते हैं। आप जिस मार्ग पर आज चल रहे हैं, उसके विषय में ध्यान से सोचिये। यदि आप किसी बड़े शहर में अपने मित्र से मिलने जा रहे हैं, तो आप निश्चय कर लेना चाहेंगे कि आप सही मार्ग पर हैं। जब आप किसी मोड़ या चौराहे पर

पहुंचते हैं तब आप सावधानी से उस मार्ग का पता लगाते हैं जिस पर आपको जाना है। यदि कोई व्यक्ति आपको सूचित करता है कि आप ग़लत मार्ग पर जा रहे हैं तो क्या आप उससे बहस करते और झगड़ते हैं? क्या आप खुश नहीं होते हैं कि किसी ने आपको सही मार्ग बता दिया है। यदि आप मनुष्य की बातों पर विश्वास कर सकते हैं तो परमेश्वर की बातों पर और अधिक ध्यान देना चाहिये।

परमेश्वर का वचन कहता है: "ऐसा भी मार्ग है, जो मनुष्यों को सीधा देख पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।" (नीति-वचन १६:१५)

"दुष्टों का मार्ग नाश हो जायेगा" (भजन १:६)

"चौड़ा है वह फाटक, और चालक है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है, बहुतेरे हैं जो उसमें प्रवेश करते हैं।" (मत्ती ७:१३)

जब आप यह स्पष्ट अनुभव करते हैं कि आप ग़लत मार्ग पर चल रहे हैं—एक ऐसे मार्ग पर जो परमेश्वर के पास नहीं पहुंचता है—प्रभु से विनती कीजिये कि वह आपको सही मार्ग दिखाये। वह आपको यह अपने वचन से दिखायेगा।

सही मार्ग

कुछ साल पहले मैं हालैंड देश के 'एमस्टरडेम' शहर में एक मसीही सम्मेलन में भाग लेने गया था। इस सम्मेलन के बाद मुझे पश्चिम जर्मनी देश 'हिलब्रन' शहर के सम्मेलन में बोलना था। मेरा एक मित्र मुझे अपनी मोटर गाड़ी में "एमस्टरडेम' से 'हिलब्रन' ले गया।

वह अपने साथ पश्चिम जर्मनी का मार्ग-मानचित्र ले गया। यह उसका मार्ग दर्शक था। उसने मानचित्र का अनुसरण किया और मुझे सुरक्षित रीति से सही स्थान तक पहुंचा दिया। उसी रीति से

बाइबल हमें परमेश्वर के पास पहुचाने के लिए मार्ग दिखाने के लिए मार्ग-मानचित्र के समान है। प्रभु यीशु ने स्वयं कहा, "मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूं, बिना मेरे द्वारा कोई पिता (परमेश्वर) के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना १४:६)

प्रभु यीशु ने यह नहीं कहा कि परमेश्वर के पास पहुंचने के लिए वह एक मार्ग है। इसका अर्थ यह होता कि दूसरे मार्ग भी हैं। उसने स्पष्ट रीति से कहा कि वह स्वयं ही एक मात्र सच्चा और जीवित मार्ग है। उसने यह कहने के द्वारा और भी स्पष्ट कर दिया कि उसके बिना कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता। उसने साफ-साफ कहा कि परमेश्वर के पास पहुंचने के लिए वह एक-मात्र मार्ग है।

बाइबल हमें यह भी बताती है कि "परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर और मनुष्य के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है।" (१ तीमुथियुस २:५) केवल एक ही परमेश्वर है; अनेकों देवी देवता नहीं। स्वर्ग जाने के लिए एक ही मार्ग है, अनेक नहीं। एक ही बिचवई है, अनेक नहीं। वह बिचवई मसीह यीशु है जो मनुष्य है। जब पतरस ने प्रचार किया कि प्रभु यीशु एक मात्र उद्धारकर्त्ता है, तो यहूदी धर्म गुरु क्रोधित हो गए। परन्तु पतरस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर कहा, "और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।" (प्रेरितों ४:१२)

जगत के पापों के लिये अपना प्राण देकर प्रभु यीशु ने स्वयं उद्धार का मार्ग तैयार किया। हमें परमेश्वर के पास वापस लाने के लिये उसने क्रूस पर अपना रक्त बहाया। बाइबल बताती है कि जितने लोग प्रभु यीशु पर विश्वास रखते हैं उनको 'यीशु के लोहू के द्वारा उस नए और जीवते मार्ग से पवित्र स्थान (अर्थात् परमेश्वर की

उपस्थिति) में प्रवेश करने का हियाव हो गया है।" (इब्रा० १०:१९) पापी अपने पुराने मार्ग, मृतक मार्ग में चलते हैं, जो उन्हें परमेश्वर से दूर ले जाता है। परन्तु प्रभु यीशु ने पापियों को परमपवित्र परमेश्वर की उपस्थिति में वापस लाने के लिये इस नये और जीवते मार्ग को तैयार करने के लिये अपना रक्त बहाया। इसी कारण विश्वासी "सच्चे मन और पूरे विश्वास के साथ, विवेक का दोष दूर करने के लिए हृदय पर छिड़काव लेकर···परमेश्वर के समीप आ सकते हैं।" (इब्रा० १०:२२)

परमेश्वर चाहता है कि आप यह जान कि पाप के कारण आप में एक दोषी विवेक है। आपको अपने पापों से मुड़कर प्रभु यीशु पर विश्वास रखना चाहिये। वह आपके हृदय को अपने लोहू के छिड़काव से शुद्ध करेगा। बाइबल बताती है कि "परमेश्वर का पुत्र प्रभु यीशु का ख़ून हमें सब पापों से शुद्ध करता है।" (१ यूहन्ना १:७) केवल इसी रीति से हमारे हृदय शुद्ध हो सकते हैं। प्रभु यीशु मसीह के लोहू ने हमारे लिए एक नया और जीवित मार्ग भी खोल दिया है कि हम परमेश्वर क निकट आ सकें। पौलुस ने इफिसुस के विश्वासियों को लिखा, "पर अब तो मसीह यीशु में तुम जो पहिले दूर थे, मसीह के लोहू से निकट हो गये हो।" (इफि० २:१३)

सन् १९४१ के ११ सितम्बर को मैं ने अनुभव किया कि मैं एक पापी हूँ और तब मैं अपने पापों से मुड़ा। मैं ने अपना मार्ग छोड़ दिया और 'उद्धार के मार्ग पर' प्रभु यीशु के पास आया। अपने टूटे हृदय से मैं ने उससे प्रार्थना की। मैं ने उसे अपना मुक्तिदाता ग्रहण किया। उसके लोहू के द्वारा मेरा हृदय शुद्ध हुआ और मेरे पाप क्षमा हुए। मैं ने प्रभु यीशु को अपना मुक्तिदाता ही नहीं, वरन् अपना प्रभु भी ग्रहण किया। मैं जानता था कि न केवल वह मेरे लिए मर गया,

परन्तु मेरे लिए वह जी भी उठा। मसीह में मैं ने सच्ची शांति, सच्चा आनन्द, सच्चा उपचार, सच्ची ज्योति और सच्चा मार्ग पाया है। प्रभु यीशु मुझे सच्चे और जीवते परमेश्वर के पास वापस लाया है और अब मैं अपने प्रेमी स्वर्गीय पिता के साथ वास्तविक सहभागिता का आनन्द लेता हूं।

मेरे प्रिय पाठक, आपके विषय में क्या बात है? क्या आपने कभी यह अनुभव किया कि आप ग़लत मार्ग में चल रहे होंगे? यह स्वधार्मिकता और पाप का मार्ग है, वह पथ जो नरक पहुंचाता है। यदि यह सच है तब पश्चाताप कीजिए। प्रभु यीशु पर विश्वास करने के द्वारा आपको ग़लत मार्ग को त्याग कर सही मार्ग पर आना होगा। केवल वह ही मार्ग है। अपने सारे हृदय से उस पर विश्वास कीजिये। यह विश्वास कीजिए कि वह आपके पापों के लिए क्रूस पर मरा और परमेश्वर के साथ आपका मेल कराने के लिए वह जी उठा। वह अपने बहुमूल्य लोहू के द्वारा आपको आपके पापों से शुद्ध करेगा। अपने लोहू के द्वारा उसने एक नया और जीवित मार्ग तैयार किया है जिसके द्वारा आप सच्चे और जीवित परमेश्वर की उपस्थिति में आ सकते हैं।

क्या आप इस प्रकार प्रार्थना करेंगे?

"हे परमेश्वर, मैं जानता हूँ कि मैं एक पापी हूं। मैं जानता हूं कि मैं ग़लत मार्ग में चल रहा हूं। मैं अपने पापों से पश्चात्ताप करता हूँ। हे परमेश्वर, मैं अपने सारे हृदय से विश्वास रखता हूं कि प्रभु यीशु ने अपना बहुमूल्य रक्त मेरे पापों के लिए बहाया। मैं यह विश्वास रखता हूँ कि वह ही उद्धार का एकमात्र मार्ग है। अभी मैं उसे अपने हृदय में अपना मुक्तिदाता और प्रभु ग्रहण करता हूं। आमीन्।

यदि आपने सचमुच अपने हृदय से आज यह प्रार्थना की है तब अपना हस्ताक्षर यहाँ कीजिये और तारीख भी लिखिये।

हस्ताक्षर.....तारीख.....

यदि आप सचमुच अपना भरोसा प्रभु यीशु पर रखते हैं, तो परमेश्वर आपको अपने सन्तान के समान ग्रहण करेगा। वह आपके हृदय में निश्चयता देगा कि उसने आपको आपके पापों से शुद्ध किया है और आपको नरक से बचाया है। बाइबल उनके संबंध में, जो अपना भरोसा प्रभु यीशु पर रखते हैं, यह कहती है :

"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धारा हुआ और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है" (इफि० २:८)। "पर अब तो मसीह यीशु में तुम जो पहिले दूर थे, मसीह के लहू के द्वारा निकट हो गये हो।" (इफि० २:१३)

यदि आप सच्ची शांति, सच्चे आनन्द, सच्चे उपचार, सच्ची ज्योति और सच्चे मार्ग के विषय में और अधिक जानना चाहते हैं, तो लेखक को लिखिये।

पता : भाई जार्डन सी खान
४८१ नेपियर टाउन
जबलपुर
मध्य प्रदेश